Chapter-2

अध्याय-२

मन्नू भंडारी

के

उपन्यासों

तथा

कहानियों

का

आलोचनात्मक

अध्ययन

प्रास्ताविक :

साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है । उसमें समाज के प्राण प्रश्नों और समस्याओं का निरूपण रहता है । यदि इस दृष्टि से विचार करें तो उपन्यास सर्वदा सार्थक विधा प्रमाणित होती है । समाज की सामाजिक, धार्मिक, पारिवारिक, आर्थिक, सांकृतिक, मनोवैज्ञानिक, परिस्थतियों का उसमें यथार्थ चित्रण होता है । यदि किसी देश या समाज की वास्तविक परिस्थितयों से कोई अवगत होना चाहे तो उसे उस काल विशेष के उपन्यास साहित्य का अध्ययन और अवलोकन करना चाहिए।

कार्लमार्क्स ने कहीं लिखा है कि मैं फ्रांस के जनजीवन को जितना बाल्ज़ाक के द्वारा जान पाया हूँ उतना फ्रांस के समाज-शास्त्रियों, इतिहासकारों और शिक्षाविदों से भी नहीं जान पाया। स्वतंत्रता के बाद के भारतीय जीवन का जो लेखा-जोखा है, विशेषत: नगरीय नारी जीवन की जो वास्तविकताएँ हैं उनका सही सटीक वास्तविक आकलन हमें मन्नूजी के उपन्यासों में उपलब्ध होता है। मन्नूजी के उपन्यास प्रमाण संख्या में कम है, परंतु समय की बात कहने में वह

कहीं भी चूकी नहीं है। यहाँ पर उनके उपन्यासों पर आलोचनात्मक दृष्टि से विचार करने का हमारा प्रयास है।

हिन्दी कथा साहित्य की सुप्रसिद्ध एवं बहुत चर्चित कथाकार मन्नू भंडारी जो कि कथासाहित्य-खासकर उपन्यासो एवं कहानियों का क्रमस: विशलेषण किया जा रहा है।

मन्नू भंडारी के उपन्यासो का आलोचनात्मक अध्ययन :

आपका बंटी :

आधुनिक हिन्दी लेखिकाओं में मन्नू भंडारी का स्थान महत्वपूर्ण है। 'आपका बंटी' स्वतंत्र रूप से लिखा गया उनका पहला उपन्यास है। स्वतंत्र इसलिए कहा गया है कि इसके पूर्व 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास राजेन्द्र यादव के सहयोग से लिखा गया था। उक्त उपन्यास पहला लेकिन महत्वपूर्ण व बहुचर्चित है।

"हिन्दी का यह पहला उपन्यास है जिसमें एक परिस्थति में पडे हुए बच्चे की मन:स्थिति का इतनी विस्तृत फलक पर चित्रांकन किया है।"[१] हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा के अन्तर्गत डॉ रामदरशमिश्र जी इस उपन्यास के बारे में लिखते हैं- "मैंने एक विशेष दायरे की बात कही है वह दायरा है पढा-लिखा मध्यवर्ग, यानि ये लेखिकाएँ स्वयं जिस वर्ग की हैं। निम्नवर्ग की स्त्रियों का अनुभव इनके पास नहीं है। उषा प्रियंवदा के दोनों उपन्यास 'रूकोगी नहीं राधिका' 'पचपन खंभे लाल दिवारे' अति आधुनिक, पढी-लिखी स्त्री की कथा कहते हैं, किन्तु दोनों उपन्यासों में स्त्री स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्ति रखने के बावजूद अजीब बेबसी और सामाजिक घिराव में अपने को बन्द पाती हैं। मन्नू भंडारी ने 'आपका बंटी' में तलाकशुदा, पति-पत्नी के प्रश्न को बच्चे की समस्या के बिन्दु से उठाया है। यह एक नया प्रश्न है।"[२]

सात साल का बंटी शिक्षित व स्वतंत्र विचारधारा वाले माता शकुन-अजय का पुत्र है। शकुन एवं अजय दोनों अहम की भावना से ग्रस्त होने के

कारण उनमें कभी समझौता नहीं हो पाता, और दोनों एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। शकुन दिल्ली की किसी कॉलेज में प्रिंसिपल हो जाती है। दूसरी ओर अजय कलकत्ता चला जाता है। अजय के कलकत्ता चले जाने के बाद वह अपने बेटे बंटी को साल में तीन-चार बार मिलने आता था। जब भी अजय दिल्ली आता था तो वह होटल में रुकता और वहाँ बंटी को बुलाकर अच्छे-अच्छे खिलौने दिलवाता। बंटी चाहता है कि उसके पापा और मम्मी एक साथ रहें, लेकिन वह उनकी लडाई समझ नहीं पाता। कुछ समय बाद पति-पत्नी के बीच तलाक हो जाता है। वकील चाचा सोचते थे कि बच्चा पति-पत्नी की दूरी को पाटने में सहायक हो सकता है। परंतु ऐसा न हुआ।

कुछ समय बाद अजय, मीरा के साथ विवाह कर लेता है, और शकुन भी अपना भविष्य देखते हुए डॉ. जोशी से विवाह कर लेती है। डॉ. जोशी विधुर था लेकिन उनके दो बच्चे अमी और जोत थे। शकुन विवाह के बाद अपना घर छोडकर डॉ.जोशी के घर बंटी के साथ रहने जाती है। बंटी को नया घर और नये लोग अच्छे नहीं लगते। जब उसकी मम्मी डॉ. जोशी के बच्चे को प्रेम करती है तो बंटी यह बरदाश्त नहीं का पाता और न वह डॉ.जोशी को पापा के रूप में स्वीकार कर पाता है। इस नये घर में वह स्वयं को उपेक्षित महसूस करता है। अब वह मम्मी को दु:ख पहुँचाने में सुख का आनंद लेता है। बंटी के ऐसे स्वभाव के कारण शकुन उसे कई बार पिटती भी है। अंत में बंटी अपने पापा को पत्र लिखकर अपने साथ कलकत्ता ले जाने को कहता है। बंटी कलकत्ता जाकर दूसरी दुविधा में पडता है। क्योंकि वहाँ वह अपनी दूसरी माँ मीरा को भी स्वीकार नहीं कर पाता। अंत में बंटी की हालत ऐसी हो जाती है कि 'धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का' रह जाता है। अंत में बेचारे बंटी को माता-पिता होते हुए अनाथ की भाँति होस्टल में जीवन बिताने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

इस प्रकार हम देख सकते है कि स्त्री- शिक्षा के बढ़ते प्रचार-प्रसार से आधुनिक स्त्री जहाँ आत्मनिर्भर हुई है वहाँ दूसरी तरफ उसने कतिपय सामाजिक समस्याओं को जन्म दिया है। पुरानी अनपढ, अशिक्षित या रूढिवादी संस्कारों

से ग्रसित नारी पूर्णतया परावलंबित होने से कई बार अपमानजनक समझौतों को करते हुए भी दामपत्य की गाडी खींच ले जाती थी। वहाँ आज की आधुनिक स्त्री आर्थिक दृष्टि से स्वनिर्भर होने पर इस प्रकार के समझौते के लिए तैयार नहीं होती ।

प्रस्तुत उपन्यास में खंडित दामपत्य को दिखाना-मात्र लेखिका का लक्ष्य नहीं है। स्वयं मन्नूजी अपने इस उपन्यास के बारे में लिखती है -"मैं दिखाना चाहती थी कि खंडित माता-पिता के बच्चे किन परिस्थितियों से गुजरते हैं। सबका अपना-अपना व्यक्तित्व होता है। इस सारी परिस्थिति में बच्चों पर क्या-क्या प्रतिक्रिया होती हैं ; यही दिखाना चाहती थी। मैंने ऐसे बच्चों को देखा है, तब मन को बेचैन महसूस किया है। मैं उसी को पाठक तक पहूँचाना चाहती थी।"[३]

'आपका बंटी' उपन्यास पर मुग्ध होकर हिन्दी साहित्य के पहले मनोवैज्ञानिक कथाकार जैनेन्द्र कुमार लिखते हैं -

"बहुत अरसे बाद हिन्दी में यह सशक्त उपन्यास आया है। लेखिका की अद्भुत क्षमता से मैं स्तब्ध रह गया हूँ। लेखिका का संयम एवं सहानुभूतिशील संवेदन इस रचना में प्रकट हुआ है। ऐसी मर्मस्पर्शिता लेखकों में बहुत कम मिलती है।"[४]

"आपका बंटी' की संरचना, स्थितियों का चुनाव, पात्रों का व्यवहार, उन सबके आपसी रिश्ते, भाषा अर्थात् संपूर्ण इकाई के रूप में उसका गठन एक स्वतंत्र रूप से विचारणीय है।"

इस उपन्यास में कथानक की माँग के अनुरूप ही पात्रों का संयोजन किया है। वकील चाचा और शकुन के चरित्र एक-दूसरे को पूरी तरह प्रभावित करने में समर्थ हैं। तलाकशुदा माता -पिता के संतान बंटी (अरूप बत्रा) की दयनीय दशा का चित्रण भी कलात्मक ढंग से किया गया है। 'आपका बंटी' के बारे में माधुरी बाजपेयी लिखती हैं - "लेखिका पात्रों के साथ (विशेष रूप से शकुन और बंटी के साथ) इतनी एकाकार हो गयी लगती हैं कि उनके हर भाव

को वह स्वयं झेलती जीती दिख पडती है ।''[६]

फूफी शकुन की सेविका और संरक्षिका के रूप में चित्रित नजर आती है। बंटी के मन में जो स्नेह है वह मातृत्व से किसी भी रूप से कम नहीं हैं । इस उपन्यास के संवाद संक्षिप्त और सरल है । जैसे उदा.- वकील चाचा शकुन से एक जगह पर कहते हैं -

''जब धूरी गड़बड़ा जाती है तो जिंदगी लडखड़ा जाती है ।''[७] इस उपन्यास के संवाद छोटे हैं लेकिन चोटदार हैं । डॉ.भगीरथ मिश्र के मतानुसार-

''मनुष्य का संबध अपने युग, समाज, देश और परिस्थितियों से रहता है तथा मानव के चरित्र की पृष्ठभूमि के रूप में देशकाल या वातावरण का चित्रण उसका आवश्यक अंग है ।''[८]

उक्त उपन्यास के पात्र, उनके समय, उनकी विचारधारा, रहन सहन एवं अन्याय, जिन लक्षणों को सम्बल बनाकर कथावस्तु बढ़ती है । उनके उक्ततत्व का समग्रत: प्रतिफलन हुआ है ।

'आपका बंटी' की भाषा पात्रों के अनुरूप है । इस उपन्यास में सुशिक्षित और अशिक्षित पात्र हैं । शिक्षित पात्रों के अन्तर्गत शकुन डॉ.जोशी, अजय, वकील चाचा, बंटी, अमी, जोती आदि और श्रमिक पात्रों या अशिक्षित पात्रों के अन्तर्गत फूफी, माली, चपरासी बंसीलाल आदि हैं । फूफी ग्रामीण परिवेश में जुड़ी हुई है । इस कारण वह ग्रामीण भाषा का प्रयोग करती है । वह एक जगह पर बंटी से कहती है-

''अभी से तुम्हारा ये हाल है तो बड़े होकर पता नही क्या सुख दोगे अपनीमहतारी को ।''[९]

मन्नूजी ने इस उपन्यास की भाषा में अंग्रेजी, संस्कृत के तत्सम, तद्‌भव, उर्द्, अरबी-फारसी के शब्दों का सुंदर कलात्मक ढंग से प्रयोग किया । इस उपन्यास के हरेक पात्र के संवाद हमारे हृदय को झकझोरते है । जब फूफी हरिद्वार जा रही थी तब वह शकुन से आर्थिक मदद लेने के बजाय वचन लेती हुई कहती है-''देना ही है तो एक वचन दे दो कि हमारे बंटी भैया को जैसा आपने

बिखरा दिया है आजकल, वैसा और मत करना। बाप के रहते यह बिना बाप का हो रहा, अब माँ के रहते यह बिना माँ का न हो जाये।'' [१०]

हम नि:संदेह कह सकते है कि 'आपका बंटी' में पात्रों के अचेतन मन के एवं रिक्तता को दर्शाने के लिए सम्यक भाषा का प्रयोग किया गया है। मन्नूजी के निरूपण में मनोवैज्ञानिकता तथा मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि दिख पड़ती है और भाषा में प्रवाहिता। डॉ. सुरेश सिन्हा ने 'आपका बंटी' का मूल्यांकन करते हुए कहा है - ''इस उपन्यास में भावाभिव्यंजना की सूक्ष्मत: एवं भाषा की नई अर्थवत्ता का सौंदर्य, जिसकी विशेष चर्चा होनी चाहिए। इधर कम ही उपन्यास ऐसे है जिनमें चमत्कारों एवं कृत्रिम दुर्बोधता से बचकर आज की जिंदगी को चित्रों की भाषा और सार्थक प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। लेखिका की सजग दृष्टि, परिवेश की यथार्थता पर बराबर केन्द्रित रही है और उसे वह बड़ी सजीवता से सफलता पूर्वक प्रस्तुत कर सकी है; यह निर्विवाद है।''[११]

'आपका बंटी' उपन्यास के बारे में विद्वानगण अपने अलग-अलग दृष्टिकोण व्यक्त करते हैं। डॉ. मनमोहन सहगऊ ने अपना इस 'हिन्दी उपन्यास के पदचिन्ह' के अन्तर्गत उल्लेखनीय स्थान प्रदान किया है। एवं खुद मनोवैज्ञानिक कथाकार जैनेन्द्र कुमार ने भी इस उपन्यास की काफी प्रशंसा की। लेकिन डॉ. इन्द्रनाथ मदान यह मत है कि 'आपका बंटी' में आधुनिकता की पहचान करना संगत भी है या नहीं। डॉ. मदान के अनुसार -

'एक तरफ यह उपन्यास आँसुओं से गीला लगता है, भावुकता से भीगा लगता है और दूसरी तरफ बंटी, मां और बाप दोनों से कटकर मिसकिट होने का बोध कराता है। ..... बंटी की समस्या मानवीय है ; लेकिन इस समस्या को निभाने में या उपन्यास का रूप देने में मन्नू भंडारी का लेखक और माँ इतने घुलमिल जाते हैं कि लेखक की दृष्टि माँ की ममता से गीली होकर धुंधली पड़ जाती है, तटस्थ नहीं रहती, भावुकता की धारा बार-बार फूटने लगती है। कहीं-कहीं आधुनिकता के संकेत भी मिल जाते हैं जो इस धारा में बह जाते हैं।''[१२]

इन सभी विद्वानों ने 'आपका बंटी' के बारे में अपने अलग-अलग मत

प्रकट किये है । लेकिन मेरा मानना है कि यह उपन्यास एक नयी बात, नये विचार, नयी भाषा, नया भाव-बोध लेकर आनेवाला हिन्दी का पहला सशक्त उपन्यास है । इस उपन्यास को पढ़ना शुरू करते हैं तो पूरा न हो जाय तब तक हमें बेचैन करता है और नयी विचारधारा, नये दृष्टिकोण की ओर माता-पिता, पति-पत्नी को भविष्य में आनेवाली चुनौती के लिए सोचने पर मजबूर करता है । किसी भी कथाकार के सभी पहलू सशक्त नहीं होते । इस कारण कुछ निर्बलताओं के बावजूद 'आपका बंटी' उपन्यासकला की दृष्टि से भी निर्विवाद रूप से एक सफल उपन्यास है ।

महाभोज :

'महाभोज' नौ परिच्छेदों में विभक्त है । एक सौ उनसठ पृष्ठों में उसके कथानक को समेटा गया है । 'महाभोज' मन्नू भंडारी का मिश्रित परिवेश से संयुक्त उपन्यास है; क्योंकि उससे जुड़े हुए अधिकांश पात्र नगरीय प्रवेश के हैं । घटना स्थल गाँव होते हुए भी उस गाँव में घटित होनेवाली तमाम घटनाओं के कारण पात्र शहरी है; तथा वहाँ की गति-विधियों को संचालित करनेवाला वह राजनीतिक परिवेश भी नगरीय है । इससे मन्नूजी की सोच विशालतम होने के संकेत मिलते है । राजनीति की विद्रूपता का चित्रण हिन्दी कथासाहित्य में काफी मात्रा में हुआ है किन्तु यहाँ मन्नूजी ने एक नया आयाम दिया है ।

"मन्नू भंडारी का नया उपन्यास 'महाभोज'एक हरिजन युवक की निर्मम हत्या और उससे बननेवाले परिवेश की व्याख्या करता है । ऐसे नाजुक कथ्य का चुनाव कर मन्नू भंडारी ने एक ऐसा जोखिम भरा कार्य किया है ।... अपने इस नये उपन्यास में गाँव-जीवन की नारकीय स्थितियों का विविध और विस्तृत चित्र खींचा है । अत: शहर से भरा हुआ है । इस साहस एवं जोखिम भरे कार्य के लिए लेखिका बधाई की हकदार बन जाती है ।"[१३]

'महाभोज' में राजनीति में चल रही समकालीन कुटनीतिज्ञता का यथार्थ चित्रण है । उपन्यास से ऐसा लगता है कि मन्नू भंडारीजी ने खुद ही राजनीति में

कई बरसों तक काम किया हो और उसी का फल ' महाभोज' उपन्यास हो।

मन्नूजी की रचनाओं में कहानियों की चर्चा बहुत होती रही। कुछ कहानियां रूपांतरित होकर सिनेमा के परदों पर अवतरित हुई। इन सब बातों को देखते हुए लगता है कि मन्नूजी का कहानीकार स्वरूप ही बहुचर्चित होने योग्य है परंतु यह साधारण धारणा मन्नूजी की रचना 'महाभोज' उपन्यास होते हुए भी सफल उपन्यास है। वैसे तो उसके बीज 'अलगाव' कहानी में मिल सकते हे। ''लेखिका ने इस उपन्यास में समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों का सजीव चित्रण करते हुए अपने दृष्टिकोण का संकेत भी किया है। 'महाभोज' का उद्देश्य बहुमुखी है और वह काल्पनिक न होकर यथार्थ ही जान पड़ता है।''[१४]

इस उपन्यास के बारे में स्वयं मन्नूजी ने यह स्वीकार किया है, '' अपने व्यक्तिगत दु:ख दर्द, अन्र्द्वन्द्व या आन्तरिक 'नाटक' को देखना बहुत महत्वपूर्ण, सुखद और आश्वस्तिदायक तो मुझे भी लगता है, मगर जब घर में आग लगी हो तो सिर्फ अपने अन्तर्जगत बने रहना या उसी का प्रकाशन करना क्या खुद ही अप्रासंगिक, हास्यास्पद और किसी हद तक अश्लील नहीं लगने लगता। सम्भवत: इस उपन्यास की रचना के पीछे यही प्रश्न रहा हो। इसे मैं अपने व्यक्तित्व और नियती को निर्धारित करनेवाले परिवेश के प्रति ऋण शोध के रूप में ही देखती हूँ। बाकी प्रत्याशाएँ और आरोप तो आपके अपने हैं।''[१५]

''सामान्यत: 'महाभोज' को राजनैतिक उपन्यास कहा जाता है और उसमें समकालीन राजनैतिक पतिस्थितियों का प्रसंगानुसार चित्रण भी किया गया है। आज के युग में चुनाव एक आवश्यक राजनैतिक प्रक्रिया है। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से इस चुनाव के बीच मानवीय त्रासदी करूणा और पीढी की नियति की सचाई को अभिव्यंजित करने का सशक्त प्रयास लेखिका ने किया है। राजनीतिज्ञों की ऊपरी महानता, औदात्य तथा गम्भीरता भरे खोल के अन्दर से उनकी जो घिनौनी तस्वीर उभरती है वह छोटे-से छोटे ब्योरे के माध्यम से उभारी है।''[१६]

'महाभोज' घटना प्रधान या चरित्र प्रधान उपन्यास न होकर वातावरण प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास में एक प्रमुख या आधिकारिक कथा न होकर विभिन्न कथाओं का संगुफन इस तरह किया गया है कि अन्त तक पाठक जिज्ञाशावश पढ़ता जाता है। 'महाभोज' में निम्नलिखित कथाओं का संयोजन मिलता है।

१. बिसू या बिसेसर की कथा

२. मुख्यमन्त्री या-साहब की कथा

३. सुकुलबाबु की कथा (भूतपूर्व मुख्यमंत्री)

४. शिक्षामंत्री एवं असंतुष्ट दल के नेता त्रिलोचन की कथा।

५. बिन्दा एवं रूकमा की कथा।

बिसू या बिसेसर उन परंपरागत सामंतवादी तत्वों की आँखों में कांटे की तरह खटकने लगता है, क्योंकि वह पिछड़ी जाति में विशेषत: हरिजन बस्ती में लोगों में सुषुप्त चेतना को जगाने के कार्य में लगा हुआ था। वह हरिजन बच्चों को पढ़ाता है और गाँव के हरिजन मजदूरों को उनके उचित अधिकारों के लिए तथा सरकार द्वारा नियत की गई मजदूरी की दरों को दिलाने के लिए उन्हें संगठित करता है। फलत: उसे नकसलवादी होने का झूठा आरोप लगा कर उसे जेल में बंद कर दिया जाता है। जेल से छूटकर कुछ दिन शांत रहने के बाद फिर से अपने काम में लग जाता है, जिसे जोरावर जैसे लोग बरदाश्त नहीं कर सकते। हरिजनों की नैतिक ताक़त की रीढ़ को ही खत्म कर देने के लिए हरीजन बस्ती में आग लगायी जाती है। जिसमें नौ आदमी जलकर मर जाते है। बिसू इस हत्याकांड के कुछ प्रत्यक्षदर्शी प्रमाणों को जुटा कर दिल्ली जाने की तैयारी करता है, जिसमें राज्य की कई राजनीतिक हस्तियों का भविष्य खतरे में पड़ जाता था, अत: उस आवाज को हमेशा-हमेशा के लिए बन्द कर दिया जाती है। बिसू की यह हत्या एक आम घटना बनकर रह जाती, परन्तु सरोहा मत विस्तार में एक उपचुनाव दस्तक दे रहा है। यह उपचुनाव एक प्रतिष्ठा की बैठक के लिए लड़ा जा रहा था, अत: प्रदेश के मुख्य मंत्री दा. साहब तथा विरोधी दल के प्रबलनेता सुकुलबाबू आमने-सामने टकराते हैं। राजनीतिक

गिद्धो के लिए बिसू की यह मौत एक महाभोज का अवसर बन जाती है।

सरोहा का यह उपचुनाव दा साहब का खास आदमी लखनसिंह जीत जाता है। डॉ.आई.बी. सिन्हा को प्रमोशन मिलता है। तब शहर की तीन अलग-अलग कोठियों पर तीन पार्टीयाँ नियोजित होती है, जिनके ठहाकों में बिसू की हत्या हो जाती है और ऐसा प्रतीत होता है, कि पार्टी में आये लोग मानो गिद्व और गिदड़ है, जो बिसू की लाश को नोंच-खचोट-खरोंच रहे हैं। मुझे इस बारें में डॉ. पारूकान्त देसाईजी एक दोहा याद आ रहा है-

"लड़ते-लड़ते मर गया, सैतालीस में देश।
गीधड़-गीद्ध चबा रहे, बदल कबिरा भेश।"[१७]

मन्नूजी के 'महाभोज' उपन्यास को प्रारंभ से अन्त तक पढ़ने पर कहीं भी ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उसमें अवास्तविक प्रसंगो का चित्रण हुआ हो। 'महाभोज' में मौलिकता के साथ-साथ मार्मिक प्रसंगो की संयोजना होने के कारण कथानक की सरसता में कुछ भी कमी नहीं है। कथावस्तु में प्रवाह आरंभ से यह उपन्यास सार्थक है। पात्र योजना स्वाभाविक एवं सार्थक है। उनके आचार-विचार एवं दैनिक व्यवहार में कहीं भी अस्वभाविकता नहीं दिख पड़ती। कम पात्रों होने के कारण पाठक को याद रखने में सुगमता होती है।

'महाभोज' के संवाद कथा-विकास के साथ-साथ पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का परिचय देने में पूर्ण सफल रहे है। 'महाभोज' के संवाद संक्षिप्त, सरल, सरस, स्वाभाविक, रोचक एवं कौतूहलता आदि गुणों से युक्त है। 'महाभोज' में राजनीतिक परिस्थितियों का प्रसंगानुसार चित्रण किया है लेकिन मन्नूजी ने राजनीतिक वातावरण का प्रत्यक्ष रूप में विस्तृत चित्रण न कर बहुधा पात्रों के माध्यम से एवं वार्तालाप द्वारा समसामयिक राजनीतिक परिस्थितियों का सांकेतिक चित्रण किया है। कहीं-कहीं राजनीतिक वातावरण का प्रत्यक्ष रूपमें विस्तृत चित्रण किया है। 'महाभोज' की भाषा -शैली मुख्यतया बोलचाल की सरस एवं संबोध शैली है। 'महाभोज' की भाषा शैली में प्रवाहात्मकता का सुन्दर कलात्मक ढंग से चित्रण मन्नूजी ने किया है। जैसे- "इस बार तो देख

लिया सबने कि जनता की एकता में बड़ा जोर है, तूफानी जोर। तूफान आता है तो बड़े-बड़े पेड़ो को जड़ सहित उखाड़ फेंकता है। जनता एक होती है तो बड़े-बड़े राज्य उलट देती है। फिंका हुआ आदमी इस बात को सबसे ज्यादा महेसूस करता है। कुर्सी पर बैठना है तो जनता में फूट डालो... कुर्सी बचानी है तो जनता में फूट डालों। जनता की एकता-कुर्सी के लिए सबसे बड़ा खतरा है। समझ रहे हैं न आप लोग मेरी बात? आप लोग खुद...।''[१८]

मन्नू भंडारी की साहित्य प्रतिभा 'महाभोज' से और अधिक प्रकट हुई है। उपन्यास 'महाभोज' की लेखका हिन्दी की प्रतिष्ठित लेखिका है, जिन्होंने परिणाम की दृष्टि नहीं विशिष्टता की दृष्टि से हिन्दी साहित्य को गौरवान्वित किया है। शिल्प के विषय में कह गया है- ''संप्रेषणीयता का सम्बन्ध अनुभव और भाषा से है। आज का कथाकार अनुभव का धनी है, क्योंकि आवरणयुक्त पदार्थ उसकी आँखो के सामने है। इस लिए शिल्प के प्रति उसका आग्रह भी समाप्त हो गया।''[१९] मन्नूजी के बारे में यह बात खरी उतरती है। डॉ. जगमोहन चोपड़ा ने प्रस्तुत उपन्यास को आठवें दशक के उन महत्वपूर्ण उपन्यासों में स्थान दिया है जिनमें समकालीन यथार्थ का सही और कलात्मक चित्रण हुआ है। उनके अनुसार 'महाभोज'राजनीतिक जीवन में व्याप्त दोगली नीति, भष्टाचार, अवसरवादिता, अमानवीकरण, तिकड़मबाजी, दल-बदल नीति और उसके धिनौनेपन को लिए हुए हैं, जिसने आज के समस्त जीवन को भ्रष्ट और विषाक्त बना दिया है।'

नि:संदेह मैं कह सकता हूँ कि 'महाभोज' एक सशक्त कृति है। क्योंकि तत्तकालीन राजनीति में चल रही गतिविधियों को मन्नूजी ने गहराई से नापा है। आज राजनीति चंद नेताओं की कठपुतली बन गयी है। जिसके पास जोर है वह उस पर राज करे। इसी बात का यथार्थ चित्रण 'महाभोज' उपन्यास में हुआ है।

''महाभोज' में आपातकाल के बाद कोंग्रेस की पराजय और जनता पार्टी के शासनकाल की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की गई है। 'महाभोज' का परिवेश हमारा आधुनिक राजनीतिक जीवन है। वर्तमान जीवन में व्याप्त राजनीति को

लेखिका ने इस उपन्यास को खूबी से बाँधा है। इस कृति का राजनीतिक परिवेश अत्यन्त भ्रष्ट , घिनोना और लज्जित करनेवाला है।''[२०]

नि:संदेह 'महाभोज' कल की और आज की राजनीतिकी विद्रूपता और गतिविधियों का लेखा-जोखा -दस्तावेज-है।

एक इंच मुस्कान :

'एक इंच मुस्कान' मन्नूजी और उनके पति राजेन्द्र यादवजी का सहयोगी उपन्यास है। सहलेखन की यह परंपरा हिन्दी में प्रेमचंद काल से चली आ रही है। प्रेमचन्द युग में जैनेन्द्र और ऋषभचरण जैन के सह-कृतत्व में 'तपोभूमि' नामक उपन्यास लिखा गया था। तत्पश्चात् अज्ञेय तथा अन्य ग्यारह लेखकों ने मिलकर 'बारह खम्भा' नामक उपन्यास लिखा था। लक्ष्मीचंद्र जैन के संपादकत्व में कई लेखकों ने मिलकर 'ग्यारह सपनों का देश' नामक उपन्यास लिखा था।

'एक इंच मुस्कान' २५२ पृष्ठों एवं चौदह परिच्छोदों में विभक्त उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास के पुरूष पात्रों को राजेन्द्रजी ने सँवारा था और स्त्री पात्रों को मन्नूजी ने। उसका नामकरण राजेन्द्र यादव ने किया था। 'एक इंच मुस्कान' 'प्रयोगशीलता' का एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है। मन्नूभंडारी ने अपने इस उपन्यास के विषय में लिखा है-''इसमें सन्देह नहीं कि पहला अध्याय मुझे स्वयं बहुत-बहुत पसन्द आया और दूसरा अच्छा ही नहीं, आशा से अधिक अच्छा लिखा गया। वहीं तीसरा और चौथा अध्याय शिथिल बन गया।''[२१]

यह उपन्यास चौदह अध्याय में विभाजित है। पहला प्रकरण राजेन्द्र यादव जी लिखा था, दूसरा प्रकरण मन्नूजी ने लिखा। इस प्रकार पयार्य क्रम से अध्याय लिखे हैं। पहले अध्याय से ही पाठक समझ जाते हैं कि लेखक ने बड़ी कुशलता से कथानक के संकेतसूत्र दे दिये हैं और उसे 'अमर की कहानी' का आधार दे दिया है।

''लेखकीय व्यक्तित्व की समस्याओं से सम्बन्धित 'एक इंच मुस्कान' में

स्रष्टा व्यक्तित्व की उच्चतर मुक्ति कामना की अभिव्यक्ति हुई है।''[२२]

इस उपन्यास की कथावस्तु तीन प्रमुख पात्रों के आस-पास घूमती है। अमर एक लेखक है और रंजना उसकी प्रेमिका एवं प्रशंसिका है। परंतु अमर अपनी प्रेरणा अमला को मानता है। अमला अपनी धनाढ़यता, सुंदरता, और अभिव्यक्ति की सरसता के कारण अमर को अपने वश में कर लेती है। अमर रंजना के नजदीक न आये और शादी न करे इस कारण वह अमर को अपनी मन: स्थिति स्पष्ट करते हुई कहती है-''तुम्हारा लेखन साहित्य की एक उपलब्धि है। तुम्हारा तो एक मात्र उद्देश्य होना चाहिए-लिखो....लिखो...! अभी मैं वॉन गॉग की जीवनी पर लिखा उपन्यास पढ़ रही थी। कितनी-कितनी मुसीबतों में उसने कला की साधना जारी रखी है। उसे पढ़कर मुझे लगा, कलाकार का जीवन उसके पास धरोहर की तरह होता है- और कला के मार्ग में वह गरीबी की बाधा सहता है न अकेलेपन की ...। जानते हो मैं यही सोच रही थी, कि अब तुम शादी कर लोगे,...फिर तुम्हारा परिवार होगा... बच्चे होंगे... जिम्मेदारियां होंगी ... सब होगा और कला से तुम दूर होते चले जाओगे। शायद हर बाधा और हर मुसीबत के समय सोचोगे कि इसके समाप्त होते ही तुम अपनी कला साधना में लगोगे... लेकिन जिम्मेदारीयां और बाधाओं का जंजाल क्या इतनी आसानी से समाप्त होता है ... नहीं अमर... नहीं... मुझे लगता है कलाकार के लिए ये जिम्मेदारियां घातक हैं- वह मुक्त प्राणी है...।''[२३]

इन तमाम मन: स्थितियों को झेलते हुए अमर रंजना से विवाह कर लेता है। परंतु उसका विवाह सफल नहीं हो पाता। दूसरी ओर अमर अमला से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाता। विवाह के बाद भी अमला और अमर साथ-साथ देखे जाते है ; रंजना इस स्थिति को बर्दाश्त नहीं कर पाती है। इस कारण वह अमर को छोड़कर चली जाती है। उसका यह कथन उसकी यह मन: स्थिति को खोलता है- ''तुम्हारे हर व्यवहार की प्रतिक्रिया तुम्हारी उपेक्षा, अवहेलना, तुम्हारे झूठ, छल और विश्वाशधात की प्रतिक्रिया पर प्रहार किया है, हर बार मेरा मन बुरी तरह टूटा है, तड़पा है, सिसका है।''[२४] इतना भी नहीं वह पति के शारीरिक

उपभोग से उत्पन्न सुख का अनुभव भी पूर्ण रूप से न ले सकी। क्योंकि उन क्षणों में अमर तन्मयता पूर्वक न जी सका। इस उपन्यास के बारे में डॉ. विजय मोहन सिंह का कथन है, ''इस उपन्यास में प्रेम की तलाश की मुख्य समस्या यह है कि प्रेम दो व्यक्तियों को सभी बिन्दुओं पर नहीं मिलता- बल्कि वे किसी एक बिन्दु पर तो मिलते हैं, लेकिन बाकी बिन्दुओं पर अलग रहते हैं।''[२५]

राजेन्द्र यादव और मन्नूजी के लेखन में मौलिक अन्तर भी है। ''मन्नूजी कथा के पात्रों के साथ इतनी अधिक एकाकार हो जाती है कि उनका 'दुर्भाग्य' उन्हें अपना दुर्भाग्य लगता है। उपन्यास का अमर, रंजना का शत्रु नहीं मन्नू का शत्रु, हो गया था और वह कथा की समस्याओं और संभावनाओं के प्रति ईमानदार न रह कर 'अमर' की खबर लेने पर अधिक उतारू हो गयी थी।''[२६] लेखिका ने स्वयं अपने-अपने वक्तव्य में यह स्वीकार किया कि ''वह हमेशा अमला और रंजना के बीच में रही है। रंजना के प्रति अमर का व्यवहार उसे बेहद कष्ट देता था। रंजना ने दो अध्यायों में मुझे सचमुच बहुत रूलाया, अमला जब-जब आती मन एक गहरे अवसाद एक अजीब सी खिन्नता, उदासी और विरक्ति से भर उठता। यह मैं आज भी नहीं जानती कि पात्रों के साथ अपने को यूँ एकाकार कर देने की वृत्ति लेखन में सहायक है बाधक। वह बनाती है बिगाड़ती, पर इस एकात्मकता को इस बारे में अनुभव किया और बड़ी गहराई से... एक और भी अनुभव किया वह उतना ही नया था।''[२७]

इस उपन्यास का शीर्षक मन्नू भंडारी को सार्थक नहीं लगता। क्योंकि वह 'अपने-अपने वक्तव्य' में आगे लिखती हैं-''कोई और उंगली उठाए, उससे पहले मैं स्वयं ही स्वीकार कर लूँ यह शीर्षक मुझे इस उपन्यास के लिए सार्थक नहीं लगता। राजेन्द्र अभी भी इसे सार्थक मानते है; मैंने भी अंत में जाते-जाते इस और प्रयत्न किया अवश्य है; फिर भी ईमानदारी की बात कहूं तो मन सन्तुष्ट नहीं।''[२८]

मन्नूजी के कथा साहित्य में मानवीय संवेगो, संवेदनाओं और अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने के लिए मनोवैज्ञानिक शब्दावली व उपमाओं का प्रयोग

अपनी भाषा में करती है। मन्नूभंडारी के उपन्यासों को मुख्यतया मिश्रित शैली में प्रस्तुत मानना युक्तिसंगत प्रतीत होता है। क्योंकि उनमें वर्णात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मकशैली का सुन्दर प्रयोग हुआ है। इस उपन्यास में एक परिच्छेद तो पूरा पत्रात्मकशैली में लिखा गया। कहीं-कहीं इस उपन्यास में मन्नूजी ने कविता व शेर एवं अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग भी किया है।
गीत का उदाहरण देखिए-

"वृक्ष पर युग बाहु बांधे,
मैं खड़ा सागर किनारे।
वेग से बहता प्रभंजन,
केश-पट मेरे उड़ाता।"[२९]

रंजना और अमर के टूटते और बिखरते दाम्पत्य जीवन के द्वारा तथा अमर के जीवन की खिन्नता, विक्षिप्तता, तथा अन्त में आत्महत्या द्वारा; मन्दा और टण्डन के सफल दाम्पत्य जीवन का उदाहरण देकर प्राचीनतम नैतिकता के प्रति आस्था का भाव प्रकट किया है।

रंजना और अमर के क्रमशः टूटते आत्मीय सम्बन्ध को मन्नूजी ने सांकेतिक रूप में प्रकट किया है। "सूर्य पहले चौथाई, फिर आधा और देखते ही देखते पूरा जल में समा गया।"[३०] भाषा और शैली की ओर अगर दृष्टिपात करते हैं तो सबसे पहले हमारे ध्यान में यह बात आती है कि दोनों लेखकों कि शैलीगत विशेषता अलग-अलग है। राजेन्द्र यादव की अपेक्षा मन्नूभंडारी जी की शैली में अधिक प्रवाह है, अधिक सहजता और आत्मीयता है। कारण मन्नूजी अधिक भावुक है। जब कि राजेन्द्र यादव की प्रकृति अधिक चिंतनशील है। यह बात 'अपने-अपने वक्तव्य' के अंदर भी स्पष्ट होती है।

'स्वामी':

'स्वामी' महान कथाकार शरतचन्द्र की कहानी 'स्वामी' पर आधारित एक लघु उपन्यास है। त्रिकोण प्रेमकथा को अभिव्यंजित कानेवाला यह सचमुच

महत्वपूर्ण व अद्वितीय कथा प्रयोग है। " मन्नूभंडारी कृत 'स्वामी' में पाठक पायेंगे एक ऐसी युवती के अंतर्द्वन्द्व की कहानी, जो सम्बन्धों की मनोवैज्ञानिक उलझनों में लगातार उलझकर उस बिंदु पर जा पहुंचती है, जहाँ से उसे एक नया मार्ग मिलता है- ऐसा मार्ग, जो अनास्था से आस्था, अविश्वास से विश्वास, और नास्तिकता से आस्तिकता की और ले जाता है।"[३१] "शरतचन्द्र ने अपनी एक छोटी सी रचना 'स्वामी' में सौदामिनी की मर्मस्पर्शी कहानी कही थी। तत्कालीन सामाजिक परंपराओं और संस्कारों के कारण 'स्वामी' मात्र आत्मधिक्कार और पापबोध की कथा बन कर रह गई थी। प्रसिद्ध उपन्यास लेखिका मन्नूभंडारी ने सौदामिनी के अन्तर्मन में झाँका और कथा की मूल संवेदना को आवश्यक विस्तार दिया।"[३२] मन्नूजी खुद इस उपन्यास के बारे में लिखती है- "शरतचन्द्र की कहानी 'स्वामी' का लेखन मेरे द्वारा हो, यह मात्र एक संयोग ही है।"[३३] बासु चर्टजी 'स्वामी' कहानी पर फिल्म भी बनाना चाहते थे और इसकी पटकथा यानी मूलकथा की मोटी रूप रेखा को सुरक्षित रखते हुए हर प्रकार के परिवर्तन की भी स्वतंत्रता दे रखी थी, इस प्रकार मन्नू भंडारीजी ने 'स्वामी' कहानी को अपने शब्दों में बाँध कर उपन्यास का रूप दिया तथा इस पर फिल्म भी बनी।

मन्नूजी ने कहानी से उपन्यास लिखने में जो परिवर्तन किए हैं उसके सन्दर्भ में लिखा है- "हाँ, पात्रों और स्थितियों को परिकल्पना में दो पीढ़ियों की मानसिकता और दृष्टि का अन्तर बहुत शिद्त के साथ महसूस हो रहा था। मैं अपनी सौदामिनी में आत्म-भर्त्सना और आत्म-धिक्कार का वह भाव भर ही नहीं सकती थी, जिसमें शरद की सौदामिनी आद्यंत सराबोर रहती है। न तो पूर्व-प्रेमी नरेन्द्र का सौदामिनी को कलकत्ते जाकर एक कमरे में बन्द कर देना गले उतर रहा था, न प्रेमी को भाई बना लेने वाली हास्यास्पद स्थिति। इसलिए मैंने कहानी का अंतिम हिस्सा एकदम ही बदल दिया। शरद की तरह मैंने उसे एक ऐसी पदभ्रष्ट कुलवधू का रूप नहीं दिया जो पति के चरणों में गिरकर अपने इस गुरूत्तर पापकर्म की क्षमा माँगने के लिए छटपटाती है।"[३४] सौदामिनी

उसका प्रेमी नरेन्द्र और उसका पति घनश्याम के बीच की कहानी उपन्यास का स्वरूप धारण करती है। उन तीनों की कथावस्तु अधिकांश है। घटनाओं के अधिक न होते हुए सूक्ष्म भावनाओं के उल्लेखनों का अधिक चित्रण है। नरेन्द्र सौदामिनी का पड़ोशी व सहपाठी है। दोनों के बीच प्रेम है। उस प्रेम या अनुराग को पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों ने सहवासजन्य प्रेम का बहुत ऊचाँ दर्जा दे रखा है। यदि इन दोनों को ही एक-दूसरे के जीवन-साथी होने का अवसर मिलता तो शायद कहानी न बनती। लेकिन नियति को यह स्वीकार्य नहीं होता। सौदामिनी अपने मामा के तय किये हुए रिश्ते के अनुसार घनश्याम के साथ विवाह कर लेती है। इस कारण सौदामिनी को अपने पति के प्रति किसी भी तरह की अनुराग की भावना नहीं जगती। बल्कि उसके मन में अपने पति के प्रति एक क्षीणता की सही सहानुभूति भाव जागता है। इसी भाव-वश सौदामिनी को अपने पति के साथ ही रहने का अंतिम निर्णय लेने पर बाध्य करती है। ऐसी ही घटना मन्नूभंडारी की 'एक कमजोर लड़की की कहानी' के अन्तर्गत देखने को मिलती है। इस लघु उपन्यास के लिखने के कारण शरतचन्द्रजी के साथ-साथ मन्नूजी का नाम भी हिन्दी साहित्यिक क्षेत्रों में फैल गया। अंत में मन्नूजी का यह कथन सही है कि-" शरतचन्द्र की कहानी आत्मधिक्कार और पापबोध की कहानी थी, मैंने उसे एक सहज मानवीय अन्तर्द्वन्द्व का रूप दिया है।"[३५]

कलवा :

'कलवा' मन्नूभंडारी का चँवालीस पृष्ठों का लघु बालोपयोगी उपन्यास है। इसका आधार स्रोत 'पंचतंत्र' ही मालूम होता है। इस छोटे से उपन्यास में मन्नूजी ने जीवन के कटु सत्यों को उजागर करने की कोशिश की है। इस लघु उपन्यास का नायक कलवा चमार है। उसकी कथा राजपुत्र, साहु के पुत्र और चमार के पुत्र के चरित्रों को उजागर करती है। इन तीनों शिष्यों को गुरूजी ने प्रश्न किया कि-"दुनिया में सबसे शक्तिशाली कर्ता कौन है ? तुम आगे जाकर क्या करोंगे? क्या बनोगे ? इसका उत्तर राजकुमार की दृष्टि से-दुनिया में सबसे

बड़ी शक्ति भाग्य।....सबसे बडी दुर्बलता है असन्तोष। सबसे बडा कर्ता है ईश्वर..। मुझे अपने पिता का राज्य चलाना हैं। मैं भरसक कोशिश करूंगा कि पिता से मिले अपने राज्य में वृद्धि करू।''[३६] बाद में साहूकार के पुत्र ने उत्तर दिया-''दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति है धन। जिसके पास धन है उससे भगवान भी प्रसन्न है और दुनिया जहान भी। मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता हक़ भावुकता, नरम दिलवाला आदमी दुनिया में कभी कुछ नहीं कर सकता। सबसे बड़ा कर्ता मनुष्य की बुद्धि।.... अपने पिताजी की पाँच हजार गाँवो की जागीर को दस हजार की कर दूं, यही मेरी इच्छा है।''[३७] कलवा चमार ने कहा-'' दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति है मनुष्य। और सबसे बड़ा कर्ता है मनुष्य का अपना पौरूष। मनुष्य की सबसे बड़ दुर्बलता है ईश्वर और भाग्य में उसका विश्वास। ईश्वर न कभी था, न आज है।.... मैं एक ऐसी दुनिया बनाना चाहता हूँ, जहाँ आदमी न भाग्य का बनाया खाये, न बाप का दिया भोगे।''[३८]

तीनों शिष्य गुरू का आर्शिवाद पाकर अपने-अपने घर जाते हैं। राजकुमार अपने ही दृष्टिकोण को आगे बढ़ाता हुआ राज्य करता है। राजा बनने के बाद वह प्रजा का भरसक शोषण करता है। साथ-साथ उसके मित्र साहूकार ने उसकी चमचागिरी करके २०० गाँव भी भेंट में ले लिया। अंत में राजा को हर तरह उल्लू बना के चला जाता है। राजा ने प्रजा का शोषण किया इस कारण प्रजा भूखी, नंगी घूमती रहती है। ऐसे समय में पड़ोसी राज्य का राजा हमला करता है और राजा जीव बचा के जंगल में भाग जाता है। भाग्य के भरोसे जीनेवाला आदमी कुछ करने लायक नहीं रह जाता। वह घंमडी राजकुमार घास छीलता हुआ दिन काटता है। इसके पश्चात कलवा चमार का उल्लेख करते हुए लेखिका ने लिखा है वह सच्चाई, ईमानदारी, पौरूष के बल पर आगे बढ़ता है। उसके इन गुणों के कारण राजा की लड़की के साथ विवाह होता है। राजा बनने पर भी कलवा चमार की विचारधारा परिवर्तित नहीं होती। वह अपनी प्रजा को कहता है -''आप भगवान को भी भूल जाओ। भाग को भी भूल जाओ। और राजा को भी भूल जाओ। हम सभी भगवान है। अपना-अपना भाग बनाना अपने

ही हाथ में हैं । मैं आपका राजा नहीं । सेवक की तरह मैं आपके सुख-दु:ख का खयाल रखूगाँ । जिस दिन आपको मेरे काम की शिकायत हो, आप मुझे हटा दीजिए और अपने कोई और योग्य सेवक चुन लीजिए । सेवक चुनने का हक आपका है और चुना हुआ सेवक आपका सु:ख-दु:ख बँटाये यह कर्तव्य उसका है ।''[३९]

इस प्रकार मन्नूभंडारी जी ने जातिवाद को महत्व न देते हुए कर्मवाद पर बल दिया है । कलवा चमार होते हुए उसके अन्दर सच्चाई, ईमानदारी आदि गुण भरे हुए हैं । कलवा परिश्रम में विश्वास करता है । भाग्य को स्वयं बनाना चाहता है । इसी विचारधारा के लिए मैं इकबाल की पंक्ति प्रस्तुत करना चाहता हूँ -

'' खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले,
खुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रज़ा क्या है ।''[४०]

'कलवा' उद्देश्यपरक उपन्यास है । बालोपयोगी उपन्यास होने के कारण मन्नूजी बालकों को ही नहीं बड़ो को भी भाग्य के भरोसे नहीं रहने के लिए कहती हैं । हमें अपने पौरूष, बल के माध्यम से तथा सच्चाई से आगे बढ़ना चाहिए और हमारे जीवन को स्वर्गमय बनाना चाहिए ।

बंगला, मराठी तथा गुजराती आदि भाषाओं में साहित्य के बड़े-बड़े महारथी अन्य विधाओं के साथ-साथ बाल साहित्य की रचनाएँ भी करते रहते हैं । टैगोर की बाल-कहानियाँ तो जग विख्यात हैं । टाल्सटाय ने भी प्रभूत मात्रा में बाल-साहित्य लिखा है; किन्तु हिन्दी लेखकों की एक कमजोरी यह रही है कि उन्होंने बाल-साहित्य कि कुछ-कुछ उपेक्षा की है । प्रस्तुत लघु-उपन्यास द्वारा लेखिका ने इसकी पूर्ति करने का एक प्रशंसनीय कार्य किया है ।

मन्नू भंडारी की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन :
प्रास्ताविक :

'उपन्यास'और 'कहानी' ये दोनों कथा साहित्य के प्रकार है । तत्वत:

दोनों में कई समानताएँ हैं, किन्तु वस्तु एवं शिल्प में उनमें कुछ तात्विक अंतर पाया जाता है। उपन्यास में जहाँ जीवन को उसकी समग्रता में प्रस्तुत किया जाता है वहाँ कहानी में जीवन की किसी एक मार्मिक घटना को चुना जाता है और उसके छहों तत्वों पर ध्यान दिया जाता है, कहानी में ये तत्व होते हैं किन्तु किसी एक कहानी में उनमें से किसी एक को ही केन्द्रस्थ किया जाता है। किसी लेखक के एक उपन्यास से हम उस काल-विशेष से परिचित हो सकते हैं, किन्तु कहानी के सन्दर्भ में ऐसा नहीं होता। उसके लिए हमें उस लेखक-विशेष की तमाम कहानियों का अध्ययन करना होगा। मन्नूजी ने प्रमाण (quantity) में नहीं गुणवत्ता (quality) की दृष्टि से हिंदी के सशक्त हस्ताक्षरों में अपना स्थान बना लिया है। उनके लगभग पाँच कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए है ; जिनमें कुल-मिलाकर ५० जितनी कहानिंयाँ संकलित है। उनकी समग्र कहानियों का एक संकलन "नायक, खलनायक, विदूषक" के रूप में भी प्रकाशित हुआ है। उसमें बाल कहानियाँ को संकलित नहीं किया। यहाँ पर हमारा उपक्रम मन्नूजी की कहानियों के आलोचनात्मक मूल्यांकन का है।

मन्नूभंडारी की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन :

स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी कथा साहित्य में श्रीमती मन्नूभंडारी का विशेष योगदान है। उनकी विशेष ख्याति कथाकार के रूप में हैं। उनके अब तक पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके है। यथा-

कहानी संग्रह	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
१. मैं हार गई	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	१९५७
२. तीन निगाहों की एक तस्वीर	श्रमजीवी प्रकाशन, इलाहाबाद	१९५९
३. यही सच है।	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	१९६६
४. एक प्लेट सैलाब	अक्षर प्रकाशन दिल्ली	१९६८
५. त्रिशंकु	अक्षर प्रकाशन दिल्ली	१९७८

इसके अलावा मन्नूभंडारी की कुछ विशेष कहानियों का चयन करके

तीन अलग-अलग कहानी संग्रहों को प्रकाशकों ने प्रकाशित किये है; जो निम्नांकित हैं -

१. श्रेष्ठ कहानियाँ - अक्षर प्रकाशन दिल्ली -१९६९

२. मेरी प्रिय कहानियाँ - राजपाल एन्ड संन्स दिल्ली-१९७९

३. सप्तपर्णा - नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली -१९८२

लेकिन इन तीनों कहानी संग्रहो में १ से ५ क्रमवाले कहानी संग्रहो में से चुनी गई कहानियाँ हैं । इस लिए मैं उपर्युक्त पाँच कहानी संग्रहो की उचित समझता हूँ ।

मैं हार गई :

श्रीमती मन्नूभंडारी का सर्वप्रथम कहानी संग्रह 'मैं हार गई' है । इस कहानी संग्रह में कुल बारह कहानियाँ है, जिसके नाम निम्नांकित है -

१. ईसा के घर इन्सान	२. गीत का चुम्बन
३. जीती बाजी हार	४. एक कमजोर लड़की की कहानी
५. सयानी बुआ	६. अभिनेता
७. श्मशान	८. दीवार, बच्चे और बरसात
९. पंडित गजाधर शास्त्री	१०. कील और कसक
११.दो कलाकार	१२. मैं हार गई ।

अब बहुत संक्षेप में इन कहानीयों पर विचार करने का हमारा उपक्रम है :-

(१) ईसा के घर इन्सान :

इस कहानी में धार्मिक कुप्रवृत्तियों की ओर संकेत किया गया है । पहाडियों के बीच घिरे हुए शहर में मिशनरी लड़कियों का कॉलेज है । इस कॉलेज में टीचर्स, मदर,फादर लड़कियाँ आदि रहती हैं । वहाँ हर किसी को नियम, कायदे से रहना पड़ता था । किसी भी तरह की भूल की वजह से सजा हो सकती थी ।

लेकिन कभी-कभी ज्यादा सख्ती विद्रोही भी बना देती है जैसे कि सिस्टर एंजिला का व्यवहार हो चुका था, "देखो कितनी सुन्दर साड़ी पहन रखी है इसने। फिर हम क्यों अच्छे कपड़े न पहने ? हम इन्सान नहीं है ..? मैं नहीं रहूँगी यहाँ, मैं कभी नहीं रहूँगी। देखों मेरे रूप को ...मैं अपनी जिन्दगी को, अपने इस रूप को चर्च की दीवारों के बीच नष्ट नहीं होने दूंगी। मैं जिन्दा रहना चाहती हूँ, आदमी की तरह जिन्दा रहना चाहती हूँ। मैं इस चर्च में घुट-घुटकर नहीं मरूँगी... मैं भाग जाउँगी, मैं भाग-जाऊँगी...।"[४१]

वह भाग जाती है लेकिन फिर से एंजिला को पकड़ कर लाया जाता है। वह पागलों जैसी हरकत करती है। इस कारण फादर के पास भेजी जाती है फिर भी वह अपनी बातों पर अडिग रही। वह फादर के ढोंग का पर्दाफाश करती है। उसी की प्रेरणा से लूसी भाग जाती है। गिरजाघरों में पादरी, युवतियों के मानसिक संस्कारों के नाम पर अपनी काम तृप्ति कर उनकी जिह्वा बंद कर देते हैं और नारी वहाँ आँखे बंद किये सब सहन करती है। लेकिन एंजिला इस अन्याय के प्रति विद्रोह करती है। धर्म की आड में रह कर नारी का शोषण करने वाले फादर का भांडा-फोड़ देती है। वह नारी शोषण के खिलाफ आवाज उठाती है, और नारी की स्वतंत्रता चाहती है।

इस प्रकार लेखिका ने ईसाई मिशनरी संस्थानों में चलने वाले अनैतिक भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करके अपनी सही धर्मनिरपेक्ष दृष्टि का परिचय दिया है। उनके इस साहस को श्लाघनीय कहा जा सकता है।

(२) गीत का चुम्बन :

प्रस्तुत कहानी आधुनिक एवं प्राचीन परंपरा के बीच छटपटाती नारी के अव्यक्त प्रेम का चित्रण बड़े ही सशक्त ढंग से करती है।

कनिका एम. ए. पास तथा अच्छी नायिका है। माथुर साहब के यहाँ समारोह में वह मौसी के कहने पर गाना गाने पहुँचती है। उसी समारोह में निखिल भी आता है, जो एक कवि है। कनिका कई बार निखिल के गीतों को गाती है।

आज के समारोह में भी उसने निखिल का लिखा गीत गाया, जो निखिल को बहुत पसंद आया। निखिल से परिचय होने के उपरांत कनिका रेडियों पर गाने लगती है और काफी नाम कमाती है। एक दिन दोनों आपस में स्त्री-पुरूषों के सम्बन्ध में चर्चा छेड़ देते हैं। निखिल विवाह पूर्व के स्त्री-पुरूष के सम्बन्ध जायज़ समझता है; लेकिन कनिका का तर्क था- "बातें हम कितनी ही बड़ी-बड़ी बना ले निखिल दा, पर व्यवहार में आगे नहीं बढ़ पाते हैं। आप जो यहाँ बैठ कर इतनी लम्बी-चौडी बातें बघार रहे है ; मान लो कल को आपकी बीबी आए और किसी दूसरे पुरूष के साथ वह अपना शारीरिक सम्बन्ध रखें तो बरदाश्त कर सकेगें आप? यों ड्राइंग रूम में बैठकर बातें बनाना बड़ा सरल होता है। पर वे बातें भर ही रहती है; कोरे सिद्धांत।"[४२] ऐसी अलग-अलग विचारधारा के बावजूद निखिल कनिका को बाहों में डाल कर चूम लेता है। फलस्वरूप कनिका निखिल को चाँटा मार देती है। दूसरे दिन वह कनिका की माफी माँगकर चला जाता है। वह कनिका को एक सप्ताह के बाद पत्र लिखता है- "अपने उस दिन के व्यवहार से मैं बेहद लज्जित हूँ। बात यह है कुन्नी कि आज तक मैं जितनी भी लड़कियों के सम्पर्क में आया हूँ, सबने मेरी ऐसी हरकतों का स्वागत किया है, बल्कि यों कहूँगा कि मुझे ऐसी हरकत करने के लिए प्रेरित किया है।...सच, तुमने मेरी आँखे खोल दी कि शारीरिक सम्बन्ध के परे भी लड़के-लड़की की मित्रता का कोई और आधार हो सकता है, और इसी लिए मुझे तुम पर जरा भी गुस्सा नहीं ; अपने पर ही ग्लानी है।"[४३]

इस प्रकार यह कहानी ,परंपरा और संस्कारों से जकड़ी नारी कनिका के प्रेम की कुंठा को चित्रित करती है। वह निखिल को प्रेम करती है लेकिन व्यक्त नहीं कर पाती। इन दोनों के प्रेम के विकास में किसी तरह की पारिवारिक या आर्थिक बाधायें नहीं होतीं फिर भी कनिका के संस्कार इस के लिए जिम्मेदार होते हैं।

"गीत का चुम्बन एक मनोवैज्ञानिक कहानी है जिसमें कहानी लेखिका ने नारी के मानसिक अन्तद्वन्द्व को बड़ी बारीकी से चित्रित किया है।"[४४]

(३) जीती बाजी की हार :

प्रकृति के विरूध्ध जाकर जीतकर भी हारने वाली एक नारी की कहानी है, 'जीती बाजी की हार'।

आशा, नलिनी और मुरला तीनों सखियाँ एक ही कॉलेज में पड़ती है। विवाह के बारे में उन सभी का मानना था कि अपने व्यक्तित्व का खून करके इस प्रकार पति के रंग में रंग जाना उनकी कल्पना के बाहर की बात थी। लेकिन नारी सुलभ भावना के फलस्वरूप आशा एवं नलिनी विवाह कर लेती हैं। मुरला अपने सिद्धांतो पर दृढ रहती है। वह एम. ए. में युनिवर्सिटी में प्रथम स्थान प्राप्त करके शोध कार्य करना आरंभ करती है। वह अंत तक अविवाहिता रहना चाहती है। वह इस बात पर आशा से शर्त लगाती हुई कहती है कि 'मैं शादी आजीवन नहीं करूँगी'। आशा का मानना है कि- ''मुरला हो चाहे कोई, इतना जानती हूँ कि नारी को एक साथी चाहिए, एक सहारा चाहिए, परिवार चाहिए, और चाहिए बच्चे। उच्च से उच्च शिक्षा भी उसकी इस भावना को नहीं कुचल सकती।''[४५] जबकि मुरला आशा की इस विचारधारा के विपरीत कहती है- ''क्या दकियानुसी लोगों जैसी बातें करती है। सहारा उसे चाहिए जो अपने को अबला समझे। मैं सबला हूँ, मुझे किसी का सहारा नहीं चाहिए। बच्चों को तो मैं अपनी उन्नति का बाधक समझती हूँ।''[४६] कुछ वर्षों के पश्चात् फिर से दोनों सहेलियाँ मिलती हैं। जीती बाजी की याद दिलाती हुई आशा, मुरला से इनाम माँगने के लिए कहती है तब मुरला आशा की पाँच वर्षीय लड़की माँगती है। इस प्रकार मुरला बाजी जीतकर भी हार जाती है।

इस कहानी में लेखिका शिक्षित नारी की मन:स्थिति को चित्रित करने में सफल रही है। नारी मातृत्व के बिना अधूरी है। यहाँ पर नारी पर मातृत्व भावना की विजय प्रस्तुत की गई है।

(४) 'एक कमज़ोर लड़की की कहानी' :

संस्कारों से आक्रांत आधुनिक नारी की विडंबना का नाम है 'एक कमज़ोर लड़की की कहानी'। रूप इस कहानी की नायिका है जो एक-दम शताब्दी के हिसाब से देखें तो बींसवी। जब वह तीन साल की थी तब उसकी माँ उसे छोड़कर चल बसती है। लेकिन सौतेली माँ आ जाती है। जो लड़की पहले जिद्दी थी, हठीली थी, अब उसकी चंचलता, उल्लास, हौंसले हवा हो गये। कम उम्र में वह प्रौढ़ हो चली। आखिर एक दिन पिताजी के समझाने पर मामा के घर चली जाती है। वहाँ उसे ललित नामक लड़के से प्रेम हो जाता है। यहाँ आकर वह बहुँत खुश रहती है। वह प्रथम डिविज़न में बार्ड की परिक्षा उत्तीर्ण कर लेती है। फिर कॉलेज ज्वाइन करने और विषय निर्धारित करने की तैयारी शुरू हो जाती है। ललित को रूप की यह कमजोरी अच्छी और बुरी भी लगती है। ललित पढ़ाई के लिए विदेश जाता है। रूप को जाते समय कहता है-

"देख, मैं तुजे अपनी रूप सौंपकर जा रहा हूँ। इस विश्वास के साथ कि लौटूंगा तो मुझे इसी हालत में लौटा देगी।"[४७] ललित के विदेश जाने के बाद रूप की शादी थोडी ज्यादा उम्र के वकील साहब से हो जाती है। पति सहृदयी पर हमेशा काम में व्यस्त रहते हैं। ललित के विदेश से लौटने पर रूप और कालिन भागने की योजना बनाते हैं। रात को १ बजे दोनों निकल ने वाले थे। उसी रात को वकील साहब देरी से आते है। रूप के देरी से आने के बारे में पूछने पर बताते है कि अपने मित्र की पत्नी शिक्षित होते हुए भी किसी गैर आदमी के साथ भाग गयी। यह सुन कर वह कमजोर पड़ जाती है।और भाग जाने का प्रोग्राम रद हो जाता है।

"मूलत: यह कहानी पाठक को एक गहरे अवसाद पर लाकर छोड़ती है, और रूप के प्रति सहानुभूति जगाकर पाठक में विद्रोह की चेतना को जन्म देती है।"[४८]

(५) सयानी बुआ :

''सयानी बुआ' एक चरित्र प्रधान कहानी है। जो सयानी बुआ की अति अनुशासनमयी प्रवृत्ति के कारण एक विचित्र हास्यात्मक स्थिति उत्पन्न कर देती है।''[४९]

अधिक अनुशासन और समय की पाबन्दी तथा व्यवस्था के रूढ़ियों में जकड़े कोई भी जिन्दगी जड़ यन्त्रचलित तथा संवेदना-शून्य हो सकती है। यही बात इस कहनी में मिलती है। 'सयानी बुआ' बचपन से ही अनुशासन प्रिय है। उसके घर में काच की चींजे भी १५ वर्षों तक ऐसी की तैसी रहती है। पूरा परिवार बुआ के इस आतंक के शिकार हैं। बुआ के पति अन्नू के बीमार होने से पहाडियों पर रहने चले गये। एक महीने तक खत नहीं आया तो बुआ अपनी बिटिया अन्नू की वजह से दु:खी थी। लेकिन एक महीने के बाद उनके पति ने एक खत भेजा और उसमें लिखी पहली पंक्ति पढ़कर बुआ रोने लगी। शायद कोई दु:खद घटना घटित हो। लेकिन वास्तव में उसके पति ने पचास रूपये वाले दो प्याले के टूट जाने का खेद व्यक्त किया था। वास्तविक स्थिति से परिचित होते हुए बुआ रोते-रोते हँसती हैं। इस खत से उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है। क्योंकि अन्नू की बिमारी से ज्यादा पति दो-प्याले की चिंता करते थे। यह कहानी उपेन्द्रनाथ 'अश्क' द्वारा लिखत 'अंजो दीदी' नाटक की याद दिला देती है।

'' कहानी का मूल उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों पर व्यंग्य'और कटाक्ष करना रहा है जो जड़ हो रसमय जीवन को नीरस बना देते है। सचमुच सयानी बुआ के माध्यम से लेखिका सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार और मौन व्यंग्य करने में बेहद सफल रही है।''[५०]

(६) अभिनेता :

इस कहानी का नायक दिलीप और नायिका रंजना है। दिलीप विवाहित होकर भी रंजना को झूठ बताकर शादी के स्वप्न दिखाता है। दोनों कलाकार भी

है। कभी-कभी तो वह रंजना का आर्थिक शोषण भी करता है। लेकिन एक दिन रंजना को मेज की दराज में से एक पत्र प्राप्त होता है। जिससे उसके सारे झूठों का पर्दाफाश हो जाता है। लेकिन दिलीप शादीशुदा है यह जानकर वह टूट जाती है। क्योंकि उसे वह प्यार भी करती थी। उसकी पत्नी बनने के सुनहले स्वप्न भी देखे थे। वह अपने प्रेमी दिलीप (अभिनेता) पर पत्र लिखती है तो सिर्फ इतना लिख पाती है-

"मैं तो केवल रंगमंच पर ही अभिनय करती हूँ, पर तुम्हारा तो सारा जीवन ही अभिनय है। बड़े ऊँचे कलाकार और सधे हुए अभिनेता हो मेरे दोस्त।"[५१] "यह कहानी प्रतीकों एवं संकेतो के माध्यम से जिस प्रकार से वस्तु को प्रस्तुत करती है उससे कहानीकार की क्षमता और शिल्पगत प्रोढ़ता उजागर होती है।"[५२]

(७) श्मशान :

इस कहानी में मानवीय संवेदना तथा मनोभोवों को चित्रण मन्नूजी ने किया है। माध्यम श्मशान और पहाड़ी के संवाद है। इस कहानी का नायक तीन बार शादी करता है। और तीनों बार पत्नी मर जाती है। लेकिन जब-जब शव को जलाने वह श्मशान जाता है तब-तब कहता है कि मैं मेरी पत्नी को बहुत प्यार करता हूँ मैं उसके बिना नहीं रह सकता। तब श्मशान खुद अवाक सा रह जाता है। 'श्मशान' कहानी इस सत्य की ओर संकेत करती है कि -'मनुष्य प्रेम की स्मृति, कल्पना और आध्यात्मिक भावना पर ही जिन्दा नहीं रहता। वह जीवन की पूर्णता के लिए फिर से प्रेम करता है, जीवित रहने का प्रयत्न करता है, वह हर वियोग को झेल लेता है, व्यथा सह लेता है। कहानी में प्राकृतिक वातावरण का मानवीयकरण प्रस्तुत किया है। इससे लेखिका की शिल्पगत सजगता प्रकट होती है। प्रस्तुत कहानी से यशपाल कृत 'बारह घंटे' उपन्यास की स्मृति ताज़ा हो जाती है।

(८) दीवार, बच्चे और बरसात :

यह एक प्रतीकात्मक कहानी है । यहाँ दीवार- पुरानी रूढ़ियों का, बच्चे नयी पीढ़ी तथा बरसात नये विचार और सामाजिक मूल्यों का प्रतीक है । ''मंडली जमाकर बड़ी दबी-ढकी जबान और रहस्यात्मक ढंग से पराये घरों की बातें उछालना , पर निंदा करना आदि भारतीय स्त्रियों के लिए नई बात नहीं है । औरतों की एक ऐसी ही मंडली , उनकी निंदा करनेवाली प्रवृत्ति और समूह की मानसिकता का रोचक वर्णन तथा संस्कारों को तोड़ने हेतु बाध्य नारी का चरित्रांकन इस कहानी में हुआ है । ''[५३] शिक्षित नारी घर को संभालते हुए जब अपनी इच्छाओं की पूर्ति में पति से विरोध पाती है तब वह घर छोड़ देती है । पति-पत्नी के सम्बन्धों में दरार,कडुआहट आ जाती है । पत्नी घर छोड़कर चली जाती है । आधुनिक नारी की यह दुःखभरी कहानी भी रही है कि वह दोनो तरफ पिसती रहती है । एक तरफ पुरुष प्रधान समाज और दूसरी और परंपरागत रूढियों में आबद्ध नारी समाज, नारी ही नारी की दुश्मन है । नारी को उपर उठने में मदद नहीं करती , बल्कि उसकी उपेक्षा करती है । कुछ ऐसा ही उपहास करती नारियाँ नागार्जुन कृत 'रतिनाथ की चाची' नामक उपन्यास में दिखाई देती है । व्यक्ति अहं और सामाजिक परिवेश में उसके टूटने का यथार्थवादी चित्रण , पति-पत्नी के सम्बन्धों , पारिवारिक जीवन , आधुनिक प्रेम, आदि का वर्णन भी इस कहानी के माध्यम से मिलता है ।

(९) पंडित गजाधर शास्त्री :

'पंडित गजाधर शास्त्री' स्वयं को महान साहित्यकार समझनेवाले शास्त्री जी की चरित्र प्रधान कहानी है ।

पंडितजी अहंवादी थे । एक बार वे पुरी के समुद्र किनारे गये थे वहाँ एक साहित्यकार से मिलते हैं जिनके तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके थे । पंडित जी अपना परिचय देते हुए कहते हैं कि- मैं हूं कहानी लेखक पं.गजाधर शास्त्री । यदि हिन्दी साहित्य से आपका परिचय हो तो आपने मेरा नाम अवश्य

सुना होगा। सात साल पहले 'रश्मि' में एक कहानी निकली थी 'अमीरी-गरीबी'। साथ-साथ यह भी स्वीकार करते हैं कि उनकी अभीतक कोई पुस्तक नहीं हुई ,पर शीघ्र ही तीन-चार पुस्तकें छपनेवाली है। पंडितजी ने पत्रिका में छपी हुई कहानी देकर सुंदर आलोचना लिखने के लिए उस लेखक से कह दिया। सामनेवाला व्यक्ति भी साहित्यकार था। आत्म प्रशंसा में लिप्त आचारों और विचारों में भिन्न यह पात्र अनजाने ही उस लेखक की कहानी के एक पात्र बन गए। पंडितजी जैसे लोग हमेशा ''मै''- ''मै'' करते रहते हैं और ऐसे आत्मश्लाघी लोग समाज में हंमेशा हास्य के पात्र बन जाते है। इस संदर्भ में एक दोहा स्मृति में कौंध रहा है-

''मैं की मय सबसे बुरी रखे सदा मदहोश।
ना औरो की सुन सके, न देख सकें निजदोष''

इस प्रकार यह कहानी अहंवादी साहित्यकारों की और संकेत करती है।

(१०) कील और कसक :

''कील और कसक' यौन अतृप्ति के परिणाम की ओर संकेत करती है। विरूप और जड़ पति से अतृप्त होने पर प्रस्तुत कहानी की नायिका परपुरूष की ओर आकृष्ट होती है, पर उसके भी विवाहित हो जाने से उसके अचेतन में अपने अधिकार हरण की प्रतिक्रिया है। वस्तुतः यानि अतृप्ति की कील कसक-कसक कर उसके मानस को अशान्त बनाये रखती है।'' [५४]

रानी का विवाह काले और चेचक के दागोंवाले कैलाश से होता है। वह रात-दिन काम करता है , क्योंकि उस पर लगभग १२००० का कर्जा है। लेखिका के शब्दों में -

''कैलाश स्वयं एक मशीन बन गया था , भावनाहीन,रसहीन , उसे न रानी में दिलचस्पी थी , न घर में । कर्ज का भूत कोड़े लगा-लगाकर उससे काम करवाता था।''[५५] रानी के यहाँ एक पेइंग गेस्ट आता था जो स्वस्थ एवं सौंदर्यवान था। पति की उदासीनता शेखर द्वारा रानी की प्रसंशा और सहानुभूति

ने उसे शेखर की और आकृष्ट किया। उन्हीं दिनों शेखर का ब्याह उसकी जीजी ने सुंदर लड़की से करा दिया। शेखर के पडोश में रहने के कारण रानी उसकी पत्नी के प्रति सौतिया दाह रखती है। अब वह बात-बात पर शेखर की पत्नी से लड़ती थी। एक दिन शेखर से भी झगड़ा करती है। यह सब देखकर कैलाश मकान बदल देता है। इस प्रकार अतृप्त इच्छा की कील कसक से रानी कभी मुक्त नहीं हो पाती। ऐसी अतृप्ति आगे चलकर यौन-ग्रंथि को जन्म दे सकती है। प्रस्तुत कहानी की रानी कृष्णा सोबती के उपन्यास 'मित्रो मरजानी' की मित्रो की याद दिलाती है।

(११) दो कलाकार :

चित्रा, ललित, कला तथा अरूणा मानव सेवा में मग्न रहनेवाली दो सहेलिया है। आचार-विचार अलग होते हुए भी कालेज की अच्छी दोस्त थी। चित्रा चित्रकार है तो अरूणा समाज सेविका। वह गरीबों की सेवा करती, उसके बच्चों को पढ़ाती। गरीब का दुःख उसका दुःख बन जाता। तब उसकी सहेली आलोचना करते हुए कहती है -

''अच्छा यह बता कि तेरे यह सब करने से ही क्या हो जायेगा, तूने अपनी पाठशाला में दस-बीस बच्चे पढ़ा दिये, तो क्या निरक्षरता मिट जायेगी, झोपडी में दस-बार औरतों को हुन्नर सिखाकर कुछ कमाने लायक बना दिया तो उससे गरीबी मिट जायगी? अरे, यह सब काम एक के किए होते नहीं। जब तक समाज का सारा ढाँचा नहीं बदलता तब तक कुछ होने का नहीं, और ढाँचा ही बदल गया तो तेरे-मेरे कुछ करने की जरुरत नहीं, सब अपने आप ही हो जायेगा।''[५६]
चित्रा बाढ़ पीडितो, अनाथ, बच्चो का चित्रित कर, उसका प्रदर्शन कर बहुत ख्याति प्राप्त करती है। जबकि अरुणा बाढ पीडितों की सेवा करती है। उन अनाथ बच्चों को गोद लेती है। चित्रा दुःख को कागज पर उतारती है पर अरुणा यथार्थ में उस दुःख को दूर करती है।

लेखिका ने कोई भी कला से बढ़कर जीवन उपयोगी कर्म को श्रेष्ठ सिद्ध

किया है । केवल ललित कलाओं में प्रवीण होने पर और ख्याति प्राप्त करके मनुष्य सच्चा नहीं बन जाता सच्चा कलाकार वह होता है जो इन्सानीपन की रक्षा करें ।

(१२) मैं हार गयी :

राजनीति पर तीखा व्यंग करने वाली यह श्रेष्ठ कहानी है । इस कहानी के बारे में डॉ. सुखवीर सिंह लिखते है - ''छोटे से केनवास पर सामाजिक ढांचे के बीच पनपने वाले कटु सत्य की अभिव्यक्ति जिस सांकेतिक रूप में इस कहानी में हुई है उससे निश्चित ही परंपरागत नैतिक अवधारणाओं के प्रति नकारात्मक रूख स्पष्ट हो जाता है ।''[५७]

आज के युग में आदर्श नेता की कल्पना करना कठिन है । आज के नेता सुरा-सुन्दरी में लिप्त रहते है और लोगों को भाषण में गीता के उपदेश की बात करते हैं । इस कारण लेखिका आदर्श नेता की कल्पना में भी सृजन नहीं कर पाती । अंत में वह हार जाती है । 'मैं हार गयी' में '' वर्तमान युगीन राजनेताओं को लक्ष्य किया गया है । जो विपन्न हैं, वे अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से और जो संपन्न हैं, वे अपनी विलासिता से जकड़े हुए हैं । ऐसी स्थिति में किसी से भी विशुद्ध राष्ट्रसेवा की उपेक्षा नहीं कि जा सकती ।''[५८] प्रस्तुत कहानी हमारे सामने राजनीतिक यथार्थ को प्रस्तुत करती है । लेखिका ने दो भिन्न-वर्गों से दो-भावी आदर्श नेता का निर्माण के कार्य में असफल होकर निर्देश किया कि सामाजिक सन्दर्भों में किसी आदर्शवाद को लेकर चलना कदापि सम्भव नहीं है । यथार्थ हमारे जीवन के कण-कण में समा गया है उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते समाज में जब तक यह अधिक विषमता की खाई बनी रहेगी तब तक आदर्श सामाजिक जीवन की बात निरी कल्पना ही है ।

तीन निगाहों की एक तस्वीर :

इस कहानी संग्रह के अन्तगर्त आठ कहानियाँ संग्रहित हैं -

१. तीन निगाहों की एक तस्वीर	२.अकेली
३. अनथाही गहराइयां	४.खोटे सिक्के
५.घुटन	६. हार
७. मजबूरी	८. चश्में

(१) तीन निगाहों की एक तस्वीर :

इस कहानी में लेखिका ने 'दर्शना' की आत्मपीड़न का चित्रण किया है।

''तीन निगाहों की एक तस्वीर' यह पारिवारिक प्रेम एवं दाम्पत्य सम्बन्ध की कहानी है। जिन्दगी का यथार्थ तथा आधुनिकताबोध जीवन में अकेलेपन, आजीवनपन तथा व्यर्थताबोध को उभारने का प्रयत्न तो करता है ही। साथ ही धरातल पर संघर्ष को जन्म देकर उसके सम्बन्धों को खंडित भी करता है और उसके सोच को भी बदलता है।''[५९] बीमार दर्शना नैना की मौसी है। नैना उसे मिलने आती है। लेकिन दर्शना उसे पहचान नहीं सकती। फिरभी नैना मौसी से बेहद प्यार करने के कारण वहीं रुक जाती है। एक दिन दर्शना दम तोड़ देती है। नैना दर्शना की डायरी को देख हीरश नामक लेखक की कहानी प्राप्त करती है। और यही से दर्शना की कहानी शुरू होती है। टी.वी. से बीमार पति की दर्शना सेवा करती है। अपना अधिकतर समय पति की सेवा करने में निकालती। टी.वी. की बीमारी उस समय बहुत घातक समझी जाती थी। इसलिए ऐसे दर्दी की सेवा करना आम बात नहीं थी। उसके घर का एक कमरा हरीश नामक लेखक को दे रखा था। परिस्थितिवश उन दोनों के बीच आत्मीयता स्थापित हो जाती है। जब इस बात का पता उसके पति को चलता है तो उसे वह बहुत पीटता है। और उसे घर से निकाल देता है। कुछ समय पश्चात पति मर जाता है तो दर्शना बहुत दु:खी हो जाती है। वह नौकरी करने लगती है। इस प्रकार लेखिका ने दर्शना के आत्मपीड़ा का चित्रण किया है। दर्शना प्रेम चाहती है, साथ चाहती है लेकिन

किसी की दया या भीख उसे नहीं चाहिए। दर्शना की आत्म निर्भरता पाठक को आकर्षित करती है।

इस कहानी में तीन निगाहें नैना, हरीश और स्वयं दर्शना की है। मन्नूजी ने हिन्दी तस्वीरों को उक्त कहानी में प्रस्तुत किया है।

(२) अकेली :

सोमा बुआ बुढ़िया, परित्यक्ता और अकेली है। उसका जवान बेटा असमय चला गया है। फलस्वरूप उसके पति तीर्थयात्रा पर निकल पड़े और सन्यासी बन गये। साल में एक बार घर आते थे। पति का स्नेह न मिलने के कारण वह पास-पड़ोस के सहारे अपना जीवन यापन करती है। इसलिए कभी-भी पास-पड़ोस के घर मुंडन, छठी हो या जनेऊ या किसी भी प्रकार का प्रसंग हो बुआ पहुँच जाती और काम में हाथ बँटाती। लेकिन साल में एक बार घर आनेवाले पति को यह पसंद नहीं था इस लिए बुआ से झगड़ा करते रहते थे। फिर भी बुआ यह बरदाश्त करती थी। क्योंकि पति तो सिर्फ एक महीने के लिए आता था। एक दिन बुआ रिश्तेदार के यहाँ शादी पर जाना चाहती है लेकिन वहाँ से न्योता नहीं आता। इसलिए वह बेचैन रहती है क्योंकि शादी के दिन भी न्योता नहीं आया वह राधा को कहती है -

"अरे, नयें फैशनवालों की मत पूछों, ऐन मोकों पर बुलावा आता है। पाँच बजे का मुहूरत है, दिन में कभी भी आ जावेगा।" [६०]

शादी की तैयारी के लिए वह अपनी अंगूठी बेचकर सिन्दूरदानी, एक साड़ी, एक ब्लाउज, खरीदती है। यह भेंट में देनेवाली थी लेकिन बुलावा न आया।

मन्नूजी की यह-"एक ऐसी परित्यकता वृद्धा की कहानी है, जिसका केवल यायावरी प्रवृत्ति के पति के सिवाय् कोई नहीं। कोई अपना न होने के कारण सभी को अपना मानकर जीनेवाली, दौड़-दौड़कर सबके सु:ख-दु:ख में तत्पर रहनेवाली व अपनत्व की लालसा में आत्मप्रवंचना से छली जानेवाली वृद्धा नारी का अत्यन्त मार्मिम चित्रण इस कहानी में हुआ है।"[६१]

(३) अनथाही गहराइयां :

मन्नूजी ने इस कहानी में एक दरिद्र , जिज्ञासु, ज्ञानोपासक शिवनाथ नामक विद्यार्थी का चित्रण किया है ।

सुनंदा अध्यापिका है । वह अपने भाई और भाभी के पास रहती है । शिवनाथ बी.ए. का छात्र है । इस कारण पढ़ाई की अधिक जानकारी के लिए वह सप्ताह में तीन बार उसके घर आता है । कुछ दिनों के बाद वह रोज आने लगता है । शिवनाथ का रोज-रोज आना भैया-भाभी को अखरता है । स्वयं सुनंदा को भी अच्छा नहीं लगता । एक दिन सुनंदा को बुखार आता है । कमरे में कोई नहीं था । सुनंदा लेटी हुई थी तब खबर के लिए शिवनाथ आता है । शिवनाथ झुका हुआ बुखार का टम्प्रेचर देख रहा था । उस दृश्य को भाई-भाभी देख लेते हैं । इस घटना के कारण सुनंदा को भाई-भाभी ने शिवनाथ को घर न आने के लिए कहा । सुनंदा ने भी शिवनाथ को घर न आने के लिए कह दिया । लेकिन कुछ दिनों बाद अपनी कुछ कठिनाइयाँ हल करने के लिए एक पुस्तक सुनंदा को देता है, जिसमें प्रेम- पत्र था । उस पत्र को देखकर शिवनाथ को गाल पर तमाचे जड़ देती है ।

इस घटना से शिवनाथ आत्महत्या कर लेता है । यह खबर सुनंदा को दूसरे दिन मालूम होती है । साथी लेकचरर सुनंदा का निराश प्रेमी कहकर मज़ाक उड़ाने लगीं । उसे बार-बार शिवनाथ के बारे में विचार आते है । तीन दिन पश्चात एक लड़के ने प्रेम-पत्र की गलत-फहमी दूर की । उस पुस्तक में प्रेम पत्र था वह मेरा था । मेरे प्रेम पत्र शिवनाथ लिखता था । इसीलिए मजबूरन मुझे इस पत्र के लिए आपके पास आना पड़ा । पहले तो सुनंदा ने इस लड़के को खरी-खोटी सुनायी । लेकिन उसने कमरे में पहुँचकर अपने दोनों हाथ काट-काट कर लहू-लुहान कर दिया । वह अपने आप को बहुत-बड़ी हत्यारिन समझने लगी । कुल मिलाकर ''अनथाही गहराइयाँ' एक ऐसे दरिद्र ; किन्तु ज्ञान पिपासु लड़के की कहानी है, जिसे मुफ्त में पढ़ने वाली शिक्षिका से असीम लगाव है, जो मिथ्याभ्रम

वश उसकी आत्महत्या का कारण बनती है।''[६२] कथा और शिल्प की दृष्टि से भी यह कहानी श्रेष्ठ है।

(४) खोटे सिक्के :

'खोटे सिक्के' मार्क्सवादी जीवन मूल्यों को उसके सही परिपेक्ष्य में रखनेवाली एक महत्वपूर्ण कहानी है। खन्ना साहब टकसाल के उच्च पदाधिकारी हैं। वे लखनऊ के कॉलेज की छात्राओं को टकसाल देखने की अनुमति देते हुए स्वयं टकसाल दिखाने लगते हैं। कच्चे धातु को भट्ठी में गलाकर किस प्रकार सिक्के तैयार होते हैं यह बताया। टकसाल में बड़े-बड़े राक्षसी मशीनें होते हैं। छात्राओं के उन मशीनों के बीच काम करते हुए मजदूरों को देखकर प्रश्न करते हैं, यहाँ मजदूर अपनी जान जोखिम में डालकर काम करने क्यों आते है ? तब खन्ना साहब उत्तर देते हैं -

''काम करने। अरे, एक ही जगह खाली होती है तो पचासों टूट पड़ते हैं। आप जानती नहीं हमारे देश में इन्सान की जान बड़ी सस्ती है।''[६३]

आगे खन्ना साहब कहते है कि बहुत सावधानी के बावजूद टकसाल में खोटे सिक्के निकलते है। उनको चुनकर फिर से गलाया जाता है। कभी-कभी यहाँ दुर्धटनाएँ भी घटित होती है। पिछले साल एक मजदूर की दोनों टाँगे कट गई। ऐसे मजदूरों को हम ६० रूपये मासिक वेतन देते है। उसी दौरान उसी मजदूर की पत्नी खन्ना साहब से बिनती करती है कि उसके पति को खोटे सिक्के चुनने का काम मिले। लेकिन खन्ना साहब उसे मना कर देते हैं। चपरासी उसे बाहर निकाल देता है। यह दृश्य देख कर छात्राएँ दु:खी हो जाती है। टकसाल के उस अमानीय पक्ष को भुलाकर खन्ना साहब लड़कियों को रसगुल्ले, समोसे खिलाते हुए चुटकुले सुनाते हैं।

इस प्रकार बहुत ही सांकेतिक एवं कलात्मक ढंग से लेखिका समाज के सचमुच के 'खोटे सिक्के' कौन हैं ? उस तथ्य की ओर इशारा करती है।

(५) घुटन :

'घुटन' कहानी में दो स्थितियों में जीवन व्यतीत करने वाली दो नारियों की घुटन का चित्रण है । एक विवाहिता है तो दूसरी विवाह की इच्छुक है । विवाहिता प्रतिमा अपने पति की फौलादी बाहों में जकड़े जाने से घुटन महसूस करती है तो मोना अविवाहिता है वह अपने प्रेमी के साथ भाग जाना चाहती है । अर्थात पति के बाहों में समा जाना चाहती है । लेकिन घरवाले बाधक बनते हैं । इस कारण वह घुटन महसूस करती है । इन दोनों नारियों की मनोव्यथाओं का सुन्दर, मार्मिक रूप से चित्रण यहाँ हुआ है । इस कहानी के बारे में डॉ. सुबेदार रायजी का कथन है- ''कहानी में नये मूल्यों को उभारने का प्रयत्न किया गया है । फिर भी आतंरिक कमजोरियों का उद्घाटन इन्होंने बड़े कौशल के साथ किया है ।''[६४]

यह एक मनोवैज्ञानिक कहानी है । इस में लेखिका ने नारी के मानसिक अन्तर्द्वन्द को बड़ी सहजता और बारीकी से चित्रित किया है ।

(६) हार :

राजनीति को लेकर मन्नूजी ने 'मैं हार गयी' के बाद यह दूसरी कहानी लिखी है । इस में स्वतंत्र व्यक्तिगत के इच्छुक पति-पत्नी के द्वन्द्व को बड़ी कलात्मकता के साथ चित्रित किया है । '' यह कहानी इस धारणा को पुष्ट करती है कि आज के जीवन में नारी और पुरूष के बीच अनेक स्थितियों के कारण तनाव पैदा होने की स्थितियाँ विद्यमान है । एक प्रकार से यह कहानी 'आइड़ियावादी' कहानी है लेकिन अपने ट्रीटमेन में नई होने के कारण उपयुक्त प्रभाव जोड़ने में समर्थ होती है ।'' [६५]

दीपा राजनीति के माहौल में पली थी, इस कारण राजनीति में दिलचस्पी लेती है और किसी एक पक्ष में सक्रिय सदस्य बन जाती है । राजनीति को ही अपना जीवन एवं कार्य क्षेत्र बनाने के कारण विरोधी पार्टी के शेखर से विवाह करती है । शादी के पश्चात दोनों अपनी-अपनी पार्टी में काम करने लगते है ।

दोनों घर आकर अपनी गुप्त बातें एक-दूसरे को कहते नहीं थे। संयोगवश दोनों पार्टियों ने उन दोनों को खड़ा कर दिया। ज्यों-ज्यों चुनाव निकट आया त्यों-त्यों दीपा-शेखर के सम्बन्धों में तनाव पैदा होने लगा। दीपा पूरी मानसिकता के साथ पार्टी में चुनाव प्रचार करने लगी। इस चुनाव में दीपा अपने सभी गहनें यहाँ तक कि पति द्वारा दिये गये स्नेहोपहार भी पार्टी को दे देती है। सब लोग दीपा के कार्य की प्रशंसा करते है। चुनाव का अंतिम दिन भी आ गया। दीपा रात को घर आयी। उस समय शेखर अपने मित्र को बात कर रहा था-'' मेरी जीत की संभावना ही मुझे खिन्न बनाये दे रही है। सोचता हूँ मैं हार गया तो उस लज्जा को सह लूँगा। पुरूष हूँ और सहने का आदी। पर जीत गया तो दीपा का क्या होगा। तुम देखते हो, पगली हो गयी हैं इसके पीछे वह हार का धक्का बरदाश्त नहीं कर सकेगी और सच पूछो तो इस लिए चाहता हूँ कि मैं हार जाऊं।''[६६]

इस प्रकार की बातें कर शेखर दीपा को इमोशनली ब्लेकमेइल करता है। फलस्वरूप दीपा सहसा अस्वस्थ हो जाती है। वह दुविधा में पड़ जाती है। और अपना वोट पति की पेटी में डाल देती है। नारी जब-जब आगे बढ़ने की कोशिश करती है लेकिन पुरूष प्रधान समाज किसी न किसी प्रकार का सहारा लेके अपना उल्लू सीधा कर लेते है। उसी का यथार्थ चित्रण 'हार' कहानी में हुआ है।

इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह उकेरना चाहती है कि राजनीति अब हमारे घरों में भी आ गई है। और अपने मानव-चेतना के तमाम मूल्यों को लील लिया है।

(७) मजबूरी :

लेखिका ने इस कहानी में बूढी अम्मा का हृदयस्पर्शी मार्मिक चित्रण किया है। ''मजबूरी' कहानी भी 'अकेली' की भाँति वृद्धा नारी के मातृत्व मोह का चित्रण करती है। पोते को स्वयं से अलग करने की विवशता, उसका अंतर्द्वन्द्व बूढ़े मन की हल-चल और स्वयं के भावों को मारकर औरो के सामने स्थिति की अनिवार्यता के भरसक स्पष्ट करने का जो मनो विश्लेषक चित्रण इस कहानी में

हुआ है, वह नि:संदेह अनुपम है।''[६७]

बूढ़ी अम्मा बेटू को अपने तरीके से दुलार करती है। जो उसकी बहूँ को अच्छा नहीं लगता। वह समझती है अम्मा के लाड़-प्यार में बेटू को जिद्दी बना दिया है। बूढ़ी अम्मा अपने पुत्र का गम भुलाना चाहती है जो दूर शहर में जा बसा है। यह गम पोते की वजह से थोड़ा-बहुत भरता है। लेकिन बेटू को जब उसकी बहू लेकर चली जाती है तो वह फिर से दु:खी हो जाती है। अम्मा को जब बेटू के बारे में लोग पूछते है तो बेचारी अम्मा झूठ बोलकर कहती है - ''गठिया के मारे मेरा तो उठना दौडना तक हराम हो रहा था, सो मैंने ही कह दिया की बहू अब पप्पू बड़ा हुआ सो बेटू को भी ले जाओं।...बुढापा है, कुछ भजन पूजन ही कर लूँ।''[६८]

इस प्रकार इस कहानी में पोते के प्रति दादी का वात्सल्य भाव दिखाया गया है।

(८) चश्मे :

इस कहानी संग्रह की अंतिम कहानी 'चश्मे' है। निर्मल ने अपनी बीमार प्रेमिका शैल को त्याग कर विवाह किसी और से किया। इस घटना को याद कर वह स्वयं को दोषी ठहराता है। इस कहानी में निर्मल की इसी आत्मपीड़न का चित्रण मन्नूजी ने किया है। इस कहानी में- ''वर्तमान और अतित की घटनाओं के माध्यम से ऐसे व्यक्ति की कथा कही गई है, जिसने अपनी पहली बीमार प्रेमिका को त्यागकर अन्यत्र विवाह कर लिया है। वर्तमान में वह अपने अतीत को स्मरण कर जिस प्रकार व्यथित व आंदोलित हो उठता है- इस का सरस कौतुहल पूर्ण चित्रण इस कहानी में हुआ है।''[६९]

आज के युग में शक्ति त्याग की अपेक्षा सिर्फ सुख भोगना चाहता है। निर्मल के माध्यम से लेखिका ने अतीत और वर्तमान का संघर्ष अत्यन्त सुन्दरता से चित्रित किया है। इस कहानी के द्वारा लेखिका यह कहना चाहती है कि आज का मनुष्य कितना स्वकेन्द्रित (Self centred) हो गया है कि उसके सामने

सारे मानवीय मात्र प्राय: लुप्त हो गये हैं। भौतिकता के चश्मों ने व्यक्ति को स्वार्थान्ध बना दिया है।

यही सच है :

मन्नूभंडारी के तृतीय कहानी-संग्रह 'यही सच है' में आठ कहानियों संग्रहीत हैं। जो निम्नलिखित हैं -

१. क्षय	२. तीसरा आदमी
३. सज़ा	४. नकली हीरे
५. नशा	६. इन्कम-टैक्स और नींद
७. रानी माँ का चबूतरा	८. यही सच है

(१) क्षय :

'क्षय' इस कहानी संग्रह की पहली कहानी हैं। इस में संघर्षरत युवती की कहानी है जो परिस्थितियों से लड़ते-लड़ते टूटती दिखती है।

इस कहानी की प्रमुख नायिका कुन्ती है। कुन्ती के पिता क्षय रोगी है। पिता की बीमारी में काफी रूपया खर्च हो रहा है। अत: वह टयुशन भी करती है। दिन भर नौकरी और टयूशन करने की वजह से वह थक जाती है। और मानसिक तनाव और थकान से मानो उसे भी उसके पिता की तरह क्षय रोग हो गया हो, ऐसा वह महेसूस करती है।

" इसमें हमें एक मध्यवित्त परिवार की जिन्दगी के टूटन की चरमराहट साफ सुनाई देती है। यहाँ परिवेश के दबावो में पीढ़ियां बदल रही है, आदर्श खंडित हो रहे है। और आर्थिक दबावों के कारण प्रतिपल एक आन्तरिक घुटन महसूस हो रही है। एक और मध्य वर्ग के संस्कारों में पली पत्नी आदर्शवादी युवती कुन्ती है तो दूसरी ओर पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है सावित्री

की माँ । इन दोनों वर्गों के आपसी सम्बन्धों की टकराहटों में अन्तत: मध्यवर्ग के आदर्श टूट कर बिखर जाते हैं । उसकी आस्थाएँ हिल जाती है । और तब जिन्दगी जीना दूभर हो जाती है । कुन्ती की युवा आकाँक्षाओं एवं कोमल कलापूर्ण भावनाओं का एक विशेष बलिदान इस कहानी में शब्द-शब्द से चित्कार करता हुआ सुनाई पड़ रहा है ।''[७०]

इस प्रकार मन्नूजी ने इस कहानी में मध्यवर्गीय समाज का यथार्थपरक चित्रण से पाठक-वर्ग के मनको गहरी संवेदना में कर देती है । 'क्षय' कहानी में कुन्ती की मन: स्थिति का चित्रण सराबोर मनोविश्लेषणात्मक शैली में बहुत स्वभाविक ढंग से हुआ है ।

(२) तीसरा आदमी :

'तीसरा आदमी' में मन्नूजी ने मनोग्रंथियों से ग्रस्त सतीश के अतंर्द्वन्द्व का सुन्दर कलात्मक ढंग से चित्रण किया है । इस कहानी में - '' नयें जमाने के पति की मानसिक कमज़ोरी का पहलू स्पष्ट हुआ है । वस्तुत: सच्चाई कुछ भी नहीं होती । सब शक ही शक होता है और उसका भी कोई ठोस आधार नहीं होता । पर किया क्या जाये? परन्तु अब भी मानव इस ग्रंथि से मुक्त नहीं हुआ है ।''[७१]

इसमें प्राचीन और नवीन मूल्यों की टकराहट है । प्राचीन परंपरा के अनुसार पराये पुरूष से स्त्री का बातचीत करने मात्र से पति अपनी पत्नी पर लाछंन लगा सकता था । किंतु आज के वर्तमान युग में पति अपनी पत्नी को पर पुरूष से बात करने से शक करे तो वह हास्यास्पद कहलायेगा । 'तीसरा आदमी' में सतीश का पारंपरिक पुरूष अपनी पत्नी पर शक करता है और आधुनिक पुरूष इस शक को प्रकट करने में असमर्थ है । सतीश के इसी अंतर्द्वन्द्व का सुंदर चित्रण हुआ है ।

यह कहानी लम्बी होने के कारण उसमें तत्व दोष है । ''तीसरा आदमी' ऐसी कहानी है जिनमें अपने अन्तिम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कहानीकार जिन

कथासूत्रों को आवश्यक समझते हुए ग्रहण करता है। उन्हें भी वह एक सूत्र में संगुफित करने की आवश्यकता नहीं समझता बल्कि उन्हीं के माध्यम से वह अपने पात्रों के मानस का विश्लेषण करते हुए उनके व्यक्तित्व को स्पष्ट करने से उन पर रिफ्लेकशन डालता है।''[७२] '' चरित्र की सूक्ष्मतातिसूक्ष्म विशेषताओं को प्रकट करने एवं अपने पूरे परिवेश के सुन्दर्भ में प्रस्तुत करने की लालसा ने इस कहानी को उपन्यास के निकट पहुँचाया है।''[७३]

इस कहानी के अन्तर्द्वन्द्व से कमलेश्वर कृत 'तीसरा आदमी' के नायक का अन्तर्द्वन्द्व हमारी स्मृति में कौंध जाता है।

(३) सज़ा :

मन्नूजी ने इस कहानी में भारत देश में चल रहे आज की न्याय व्यवस्था पर तीखा व्यंग किया है। इसमें टूटने और बिखरने का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है।

आशा के पिता पर बीस हजार रूपये दफतर से चोरी करने का इल्जाम लगाया जाता है। कोर्ट में लम्बे समय तक केस चलता है। उस दौरान उसके पिता को नौकरी से हटा दिया जाता है। पूरा घर रास्ते पर आ जाता है। आशा की माँ बीमार हो जाती है। आशा और उसका छोटा भाई अपने चाचा के घर रहने जाते, वहाँ दोनों से नौकरों सा बर्ताव किया जाता है। बच्चे स्कूल जाते है तो वहाँ भी दूसरे बच्चे उनकी कटु आलोचना करते हैं। आशा के पिता घर से बाहर ही नहीं निकलते। बल्कि अपनो, से बात भी नहीं करते। अंत में कई बरसों के बाद अदालत का फैसला आता है कि वे निर्दोष हैं।

परंतु कोर्ट की 'सजा' से बढ़कर की सजा उनका परिवार भुगत चुका है। इस के लिए कौन जिम्वेवार है ?

इस कहानी के माध्यम से मन्नूजी भारत की कानून व्यवस्था की कमजोरियों का पर्दाफाश किया है। ''सजा' ऐसी अनभुगती सज़ा की कहानी है जिसके अदालती निर्णय में दो वर्ष लग गए। इन दो वर्षों के अंतराल में जो पारिवारिक व व्यक्तिगत विघटन घटित होता है- अदालती निर्णय द्वारा बरी होने के बाद भी,

मानो जीवन भर की सज़ा के रूप में संपूर्ण परिवार को भोगना पड़ता है।''[७४] न्याय शास्त्र का एक प्रसिद्ध सूत्र है-'Justice delayed is justice denied' प्रस्तुत कहानी इस सूत्र की सत्यता को उद्घाटित करती है।

(४) नकली हीरे :

इस कहानी की कथा उच्चवर्ग की नारी की ओर संकेत करती है। जिसके पास सुख-सुविधाएँ हैं लेकिन जो पति प्रेम से वंचित है।

सरन और इन्दु दोनों बहनें है। इन्दु एक अध्यापक से प्रेम विवाह करती है। वह अपने जीवन के प्रति काफी पूर्ण और संतुष्ठ है। जबकि उसके विपरीत बहिन सरन भैतिक सुखों के बीच भी अपूर्ण और अकेली है। इन्दु का जीवन देखकर सरन सोचती है कि इन हीरों में तो चमक-दमक ही नहीं है ये तो नकली है-''नहीं-नहीं, ये हीरे नहीं हो सकते। इतनी फीके और भदे...बिल्कुल सादे काँख के टुकडों की तरह...!'' [७५] '' 'नकली हीरे' अभिजात्य वर्ग की एक ऐसी पत्नी की कहानी है, जिसके पास सुख-सुविधा व संपन्नता के सभी साधन होते हुए भी पति का सान्निध्य एवं वह लगाव नहीं है जो उसकी साधारण जीवन-यापन करने वाली मध्यवर्गीय छोटी बहन को प्राप्त है।''[७६] उच्चवर्गीय के जीवन का खोखलापन यहाँ उजागर हुआ है।

(५) नशा :

भारतीय संस्कृति में ढली हुई, एक नारी का हृदय स्पर्शी चित्रण 'नशा' कहानी में हुआ है।

इस कहानी की नायिका आनन्दी का पति शंकर बहुत बड़ा शराबी था। पति शराबी होने के कारण घर की जिम्मेदारी आन्नदी पर थी। उसके तीन बच्चे थे लेकिन दो-मर गये थे सिर्फ किशून रह गया था। उसी बच्चे को खुद मेहनत करके पालती है। वहीं किशून शराबी पिता को छोड़कर चला जाता है। वह

कपडे की दूकान खोलकर शादी भी कर लेता है। एक दिन किशून अपनी माँ को लेने आता है। आन्नदी अपने लड़के के घर रहने जाती है। बहू भी अच्छी थी। लेकिन भारतीय संस्कृति में पली आन्नदी वहीं अपने लड़के को पता न चले इस प्रकार सिलाई-बुनाई करके भी अपने शराबी पति के लिए पैसे भेजती है। एक दिन किशून को मालूम पड़ जाता है तो कहता है - "ऐसा ही था तो मुझसे कह देती, माँ। रात-दिन जुतकर सिलाई-बुनाई करने की क्या जरूरत थी?"[७७] आन्नदी की आँखो में से टप-टप आँसू बहने लगें।

भारतीय नारी अपने संस्कारो के लिए अपने को मिटा देती है लेकिन संस्कारो से मुक्त नहीं हो सकती है। यहीं बात 'नशा' कहानी में चरितार्थ होती है।

इस कहानी शैलेश मटियानी कृत 'महाभोज' कहानी की शिवरत्ती का ध्यान हो जाता है जो गर्भवती होने के कारण पति को शरीर-सुख न दे सकने की स्थिति में उसे बाहर जाने के लिए रूपयें देती है। वस्तुत: 'अच्छाई' या 'आत्मपीड़ा' भी कई बार कुछ लोगों के लिए 'नशे' का काम करती हैं। यह भी एक प्रकार का 'नशा' है जिसे यह कहानी बड़े सूक्ष्म ढंग से उकेरती है।

(६) इन्कम-टैक्स और नींद :

मन्नूभंडारी इस कहानी में एक "ऐसे मध्यवर्गीय परिवार के प्रमुख का चित्रण करती है जो वास्तव में खोखला होते हुए भी आत्मसन्मान को बनाये रखने के लिए अपने बड़प्पन के गुण गाता है और आत्म सम्मान का झूठा प्रदर्शन करके ही सब प्रकार से आश्वस्ति व निश्चिंतता अनुभव करता है।"[७८]

डॉ. दयाल अहं में डूबे, हीन ग्रंथि से ग्रस्त है। इसी वजह से वे उपहासात्मक पात्र बन जाते हैं। साथ-साथ डॉ. दयाल के कथन से यह स्पष्ट होता है कि ऐलोपैथी दवा- "मानव-जाति का कल्याण कम और नाश ज्यादा किया है। एक दवाई लो, उसका एकशन कम, रिएक्शन ज्यादा होता है। हमारी होमियोपैथी करेगी तो भला ही करेगी, बुरा करने का सवाल उठता ही नहीं।

ओनली एकशन, नो रिएकशन।''[७९] कथा शिल्प की दृष्टि से यह कहानी श्रेष्ठ है।

(७) रानी माँ का चबूतरा :

इस कहानी में लेखिका ने निम्नवर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली नारी के चरित्र को उजागिर किया है।

इस कहानी में समाज के - दो वर्ग हमारे सामने आते हैं। - एक अंधविश्वास एवं मृत परंपरा का प्रतिनिधित्व करने वाला समाज और दूसरा इन मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह करनेवाला समाज। जिसका प्रतिनिधित्व एक मात्र महिला गुलाबी करती है। ग्राम्य-जीवन आज के वैज्ञानिक युग में और स्वतंत्रता प्राप्ति के पचास वर्ष बाद भी संकीर्ण मानसिकता और जड़ मान्यताओं का शिकार है। लेकिन गुलाबी अपनी पूरी ताकत के साथ गाँव की जड़ मानसिकता का सामना करती है। सबसे पहले तो वह अपने शराबी पति को घर से निकालकर परंपरावादी विवाह बंधन से पंगा लेती है। गाँव में उसके व्यवहार के प्रति कटु प्रतिक्रिया होती है। जिसका संकेत काकी के शब्दों में- ''नाम मत ले, उस चुड़ैल का मेरे सामने ! वह कोई माँ है ? कसाइन है कसाइन ! नहीं तो रानी माँ के चबूतरें में तो वह ताकत है कि पत्थर में भी ममता उपज आये। पर वह तो हेकडीवाली ऐसी कि कभी उधर मुँह भी नहीं करती। भगवान करे उसका सत्यानाश हो जाये। सारी बस्ती पर किसी दिन पाप ला देगी।''[८०]

'रानी माँ का चबूतरा' शहरी जीवन से सम्बन्धित होती हुई आँचलिकता का तत्व रखने वाली कहानी है। यह कहानी एक नयी विचारधारा लेकर हमारे सामने आती है। गुलाबी मरकर भी इस विचारधारा को लोगों तक पहूँचानें में सफल होती है।

(८) यही सच है :

'यही सच है' कहानी के आधार पर ही कहानी संग्रह नामकरण किया

गया है । इस कहानी के आधार पर वासु चटर्जी के निर्देशन में 'रजनीगंधा' फिल्म भी बन चुकी है ।

दीपा इस कहानी की नायिका है । दीपा का अपने सहपाठी मित्र निशीथ से प्रेम हो जाता है । लेकिन दीपा के पिता के मृत्यु के बाद निशीथ से अनबन हो जाती है जिसके कारण वह शोध-कार्य में लीन हो जाती है ।

दीपा के जीवन में संजय नामक एक नये व्यक्ति का आगमन होता है । वह हँसमुख, सहृदयी है । जब-जब वह दीपा को मिलता रजनीगंधा का फूल अवश्य लाता । संजय को पाकर दीपा निशिथ को भूल जाती है- " मैं तुम्हे प्यार करती हूँ , बहुत-बहुत प्यार करती हूँ? विश्वास करो संजय मेरा तुम्हारा प्यार ही सच है, निशिथ का प्यार तो मात्र छल था, भ्रम था, झूठ था ।"[८१]

दीपा इण्टर्व्यू के लिए कलकत्ता जाती है । वहाँ उसकी मुलाकात निशिथ से होती है । निशिथ बड़ी तत्परता से दीपा की मदद करता है । फिर से दीपा के मन में निशिथ के लिए प्यार उमड़ आता है तब वह सोचती है " प्रथम प्रेम ही सच्चा प्रेम होता है, बाद में किया हुआ प्रेम तो अपने को भुलाने का, भरमाने का प्रयास-मात्र होता है ।"[८२]

फिर उसके जीवन में संजय आता है । दीपा किसको चाहती है वह स्वयं ही नहीं जान पाती । क्योंकि एक मन को शांति देता है तो दूसरा शरीर को । एक का रजनीगंधा के फूल लाना, चुंबन-आलिगंन देना अच्छा लगता है तो निशिथ यानी दूसरे का समय पर आकर उसकी चिंता करना, नयी साड़ी की तारीफ करना, सुख देता है । दीपा इनको चाहती है या स्वयं अपने आपको यह स्पष्ट नहीं हो पाता है । इस कहानी के बारे में राजेन्द्र यादवजी लिखते है- " जब मैंने मन्नू की कहानी 'यही सच है' की एक और ढंग से व्याख्या करते हुए बताया कि यह प्यार और भावनात्मक अन्तर्द्वन्द्व की या दो प्रेमियों को स्वीकारती लड़की की कहानी नहीं, सन ५०-६० के बीच की उस खंडित मानसिकता की कहानी है जहाँ भारतीय मन अपने को दो मन: स्थितियों में एक साथ बँटा पाता था; एक और उसका अतीत था (कहानी का पहला प्रेमी) जो आज भी उसके लिए सच था और

दूसरी और था उसका वर्तमान-दोनों उसके लिए समान सच थे और उसे एक को चुनना था; तब इस व्याख्या को मन्नू ने 'दूर की कौड़ी' कहकर मेरा मज़ाक उड़ाया था; लेकिन मुझे अपनी बात में आज भी सच्चाई दिखती है।''[८३]

कथा शिल्प की दृष्टि से देखें तो यह कहानी डायरी शैली में लिखी गई है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी दो नायकों के बीच झुलती हुई नायिका के अन्तर्द्वन्द्व को रेखांकित करने वाली कहानी है। बाद में कुछ-कुछ इसी प्रकार के वस्तु को लेकर मृदुला गर्ग ने 'चित्त कोबरा' उपन्यास की सृष्टि की थी।

एक प्लेट में सैलाब :

मन्नूजी का यह चतुर्थ कहानी-संग्रह है।

इस कहनी संग्रह में नौ कहानियाँ संग्रहीत है।

१. नई नौकरी	२. बंद दराजों का साथ
३. एक प्लेट सैलाब	४. छत बनाने वाला
५. एक बार और	६. संख्या के पार
७. बांहो का घेरा	८. कमरे, कमरा और कमरे
९. उँचाई	

(१) नई नौकरी :

इस कहानी में रमा और कुंदन पति-पत्नी है। रमा कॉलेज में तथा कुंदन किसी आफिस में नौकरी करता है। दोनों थोड़े-बहुत संतुष्ट जरूर है। किन्तु कुंदन की नयी नौकरी पर नियुक्ति हुई कि सब कुछ बदल गया। उसका बात करने का तरीका भी बदल गया। इस नयी नौकरी के कारण उसकी पत्नि रमा महसूस करती है-'' जैसे, कुंदन उसे पीछे छोड़कर आगे निकल गया है, बहुत आगे। जैसे वह अकेली रह गयी।''[८४]

नयी नौकरी में नियुक्ति होते ही कुंदन ने उसे भविष्य के सुनहले स्वप्न

दिखाते हुए उसकी कॉलेज की नौकरी छुडवा दी। यह कहकर कि-'तुम्हें कतई अकेलापन नहीं लगेगा, तुम जरा भी कमी महसूस नहीं करोगी, शदर यू विल फील रिलीव्ड।''[८५] लेकिन नौकरी छोड़ने पर एक तरफ की मानो रोक ही लग गई ऐसा वह महसूस करती है। यहाँ तक कि १० साल के बाद भी अपनी थीसिस सब मिट नहीं कर पाती। ''नई नौकरी' ने उँचे पद के अनुरूप सामाजिक स्थिति में परिर्वतन लाने हेतु रहन-सहन को नये ढंग में ढालने के प्रयत्न साधारणतया चलते आ रहे है जीवन में जो हलचल; भागदौड़ और यांत्रिकता ले आते हैं, उनका सहज वर्णन इस कथा में हुआ है।''[८६]

प्रस्तुत कहानी हमारे पुरुषसत्ताक समाजकी यंत्रणा और घुटन को स्थापित करती है।

(२) बन्द दराजों का साथ :

इस कहानी में मंजरी की अन्तर्द्वदात्मक स्थिति का अत्यंत सहजता से चित्रण हुआ है।

विपिन की पत्नी मंजरी प्राध्यापिका थी। दोनों का दाम्पत्य जीवन सुखमय ढंग से व्यतित हो रहा था। तब अचानक मंजरी को विपिन की पिछली जिन्दगी का पता चला चलता है। विपिन को किसी स्त्री से सम्बन्ध थे उससे एक बच्चा भी पैदा हुआ था। इससे दोनों के जीवन में दरार आ जाती है। मंजरी भी गर्भवती थी। आनेवाला बच्चा दोनों दाम्पत्य जीवन की दरार को मिटा देगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वह अपने अपने बेटे असित के साथ रहने लगी। एक दिन असित को होस्टेल में रख दिया और दिलीप नामक युवक से शादी कर ली। कॉलेज की सहकर्मियों की हिकारत भरी नजर से दु:खी हो उसने नौकरी छोड़ दी। अब वह सब तरफ से सुखी थी। छुट्टियों में कभी-कभी असित घर आया करता था। मंजरी उसकी हर बातें मानती थी। छुट्टियाँ समाप्त हुई और स्कूल से फीस का कार्ड आया। उस समय दिलीप ने आर्थिक कठिनाई की बात छेड़ी। तब पहली बार उसे परावलंबिता का एहसास हुआ। फिर से उनके दाम्पत्य जीवन में दरार

आ गयी। मंजरी की जिंदगी दो टुकडों में बट गई थी एक दिलीप के साथ और दूसरी बेटे असित के साथ। डॉ.देवी शंकर अवस्थीजी ने इस कहानी के बारे में लिखा है-" आज के तनाव को यह कहानी पूरी गहराई से आँकती है। मनुष्य न तो छूटी हुई जिंदगी को छोड़ पाता है और न चुनी हुई जिंदगी को अपना सकता है। दोनों ओर खींचा जाकर वह क्षत-विक्षत हो जाता है।"[८७]

(३) एक प्लेट सैलाब :

महानगरीय बोध और जीवन का यथार्थ चित्रण 'एक प्लेट सैलाब' कहानी है।

" एक भीड़ भरे टी हाउस में भिन्न-भिन्न मानसिकताओं में उलझे हुए लोगों के समूह का वर्णन है।"[८८] इस कहानी में हम किसी पात्र के साथ एकाकार नहीं हो सकते। युवक-युवती, नेता, कॉलेज गर्ल्स, प्रौढ़ा आदि अपनी-अपनी समस्यायें लेकर आती हैं। उन्हीं लोगों की मानसिकता का चित्रण मन्नूजी ने इस कहानी में किया हैं। इस कहानी का "रचना संसार पूर्ववर्ती आधार को छोड़ता हुआ समकालीन संवेदना के धरातल पर तनाव विघटन और त्रास को उसकी सामाजिक व्याप्ति में ग्रहण करता हैं। मुल्यों के प्रति लगाव से मुक्ति स्थितियों के प्रति सहज प्रतिक्रिया के स्थान पर विरोधपरक दृष्टि, व्यक्ति संघर्ष की प्रभावशाली अभिव्यक्ति और परिवेशगत प्रमाणिकता का बढ़ता हुआ आग्रह इस कहानी को समकालीन कहानी की संवेदना के निकट ले आता है।"[८९] 'एक प्लेट सैलाब' में प्रारंभ से अंत तक बढ़ते हुए यांत्रिकीकरण एवं उदारीकरण के फलस्वरूप पल-पल बढ़ते संत्रास और विसंगतियों के सैलाब में फँसे व्यक्ति के असंतोष का चित्रण है।

(४) छत बनाने वाला :

इस कहानी में शहरी और ग्रामिणजीवन के अंतर को स्पष्ट करने की कोशिश की है।

इसमें नियमों और संस्कारो में बंधे हुए और आनेवाले कल के लिए निश्ंिचत एक परिवार की कहानी है। पूरे परिवार में ताऊजी की हुकूमत चल रही थी। ताऊजी अपने तरीके से जीवन जी रहे थे और दूसरों को भी ऐसा जीने के लिए बाध्य करते थे। वे खुद ब्राह्य जगत से दूर रहते है और बच्चों को भी दूर रखते है। वे खूद पर भरोसा करते हैं और आनेवाली पीढ़ियों पर नहीं। इस कहानी में मन्नूजी ने वर्तमान जीवन-दर्शन का भेद स्पष्ट किया है। खान-पान, रहन-सहन में आज काफी अंतर आया है। कहानी में एक ओर दूध, लस्सी है तो दूसरी ओर चाय है। एक तरफ घुंघट निकालने वाली नारी है तो दूसरी ओर बिना बाहीं का ब्लाउज। इस प्रकार प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति के अंतर को प्रस्तुत कहानी स्पष्ट करती है। इस कहानी को 'जनरेशन-गैप' की कहानी भी कह सकते हैं।

(५) एक बार और :

इस कहानी में लेखिका ने नारी जीवन के प्रथम प्रेम सम्बन्ध को महत्व दिया है।

इस कहानी की प्रमुख नायिका बिन्नी जो कि प्राध्यापिका है। वह अपनी बचपन की सहेली सुषमा के साथ गाँव में रहती है। बिन्नी के कुंज के साथ १४ वर्ष से प्रेम है। कुंज ने अपनी शादी मधु से करके बिन्नी से सम्बन्ध बनाये रखे। बिन्नी इन सम्बन्धों को तोड़ना चाहती थी, किंतु कुंज के मिलने पर वह अपने को रोंक नहीं पाती। कुंज अपनी पत्नी के आदेश से बिन्नी को किसी और से शादी कर लेने की सलाह देता है। बिन्नी का भाई बहन की शादी नंदन से करना चाहता है। नन्दन उसी गाँव में 'आदिवासियों की विवाह पद्धति' के प्रोजेक्ट पर आया हुआ है। सुषमा भी बिन्नी को नंदन से परिचय बढ़ाने के हेतु से प्रेरित करती है। बिन्नी कुंज के मोह से छूटकर नन्दन से जुडना चाहती है पर क्या करू? क्या न करू? इसी अन्तर्द्वन्द्व में उलझती है।

''मन्नू भंडारी की इस कहानी का कथा सम्बन्ध का यह विघटन है,

जिसका आधार मानसिक है। मानसिक दृष्टि से इस कहानी में अतृप्ति से दूसरे अतृप्ति बोध तक ले जाने वाली और दूहरे तिहरे स्तरों पर भागी जाती जिन्दगी के यथार्थ तथा आधुनिक जीवन में आये अकेलेपन, अजनबीपन तथा व्यर्थताबोध को उभारने का प्रयत्न है।''[१०]

कथाशिल्प की दृष्टि से देखें तो इस कहानी में चित्रात्मकता का सुंदर निरूपण हुआ है-'' रीगल के सामने के मैदान का ऐसा ही अँधेरा कोना था और ठीक इसी तरह मुँह पर रूमाल डाले कुंज लेटा था ? मुड़े हुए दोनों घुटनों को सीमा की बाहों से घेरकर उस पर गाल टिकाये बिन्नी बैठी थी।''[११]

(६) संख्या के पार :

ममता और वात्सल्य अनमोल है। उसे रूपयों से तोला नहीं जाता। यही विषयवस्तु को लेकर 'संख्या के पार' कहानी लिखी गई है।

प्रेमिला कॉलेज में पढ़ती थी। विधवा माँ उसे नाना-नानी के घर बचपन से छोड़कर कहीं भाग गई थी। उसे आजी, नाना-नानी, बाबा आदि बेहद प्यार करते थे। बाबा प्रेमिला के माँ के नाम से चिढ़ते थे। एक बार प्रेमिला की माँ घर आती है। वह प्रेमिला को अपने सीने से लगा लेती है। उसी क्षण बाबा आते है। प्रेमिला अपनी माँ के पास से हट जाती है। बाबा अपनी बेटी को १०,००० रूपये का चेक देना चाहते हैं। लेकिन प्रेमिला की माँ उसे छूती तक नहीं । वह अपनी बेटी को दुलार करती हुई पाँच रूपये का नोट देकर झटके से चली जाती है। रोती हुई प्रेमिला यह देखती ही रह जाती है।

'संख्या के पार' एक यातना ग्रस्त नारी के दु:ख-दर्द को उकेरनेवाली कहानी है जो सामाजिक ढ़ाँचे पर एक बड़ा प्रश्न करती है तथा उसके माध्यम से लेखिका ने उस व्यवस्था के प्रति प्रश्न पैदा करती है जिसमें नारी अपनी सुरक्षा के लिए कुछ भी होम करके संरक्षा नहीं पाती। खून के रिश्ते कभी भी निरर्थक सिद्ध नहीं हो सकते। और न ही उन्हें झुठलाना आसान है। शायद रिश्तों एवं सम्बन्धों का मूल्य संख्या के पार होता है। 'संख्या के पार' में मन्नूजी ने कहानी की संवेदना

बिम्ब के माध्यम से उद्घाटित किया है-" और उस क्षण जब मेरी स्तब्ध और लुप्त चेतना लौटी तो मेरी आँख भर आयीं। मैंने देखा, मेरे सामने दस हजार का चेक पड़ा था और हाथ में पाँच का नोट... आँसू भरी आँखो के पार मुझे लगा जैसे दोनो रूप अस्पष्ट से अस्पष्टतर होते जा रहें हैं ... धीरे-धीरे। उस चेक और नोट का रंग-रूप, आकार का अन्तर घुलकर एक हो गया ...यहाँ तक कि संख्याएं भी अनपहचानी हो उठीं और रह गए केवल मेरे गालों से ढुलकते आँसू ... बाबा की लौटती खट-खट और पत्थर बनी बैठी आजी...।"[१२]

(७) बाहों का घेरा :

'बाहों का घेरा' अतृप्त नारी के मानसिक तौर पर भटकने की सशक्त कहानी है।

इस कहानी की नायिका कम्मो अपने अत्यधिक व्यस्त पति मित्तल के सामीप्य को तरसती है। फलस्वरूप उसमें अनेक मानसिक विकृतियां जन्म लेती हैं। उसकी अतृप्ती अपने पूर्व प्रेमी की याद दिलाती रहती है। तो कभी अपनी भतीजी शम्मी के होनेवाले पति इन्दु के पास जाने को मजबूर करती है। कम्मो तनाव और अकेलेपन को झेलती रहती है। यौवनावस्था में उसकी जिंदगी में शैलेन नामक युवक आता है। परंतु उसकी बाहों में जाने से पहले उसका मित्तल से ब्याह हो जाता है। कम्मो को अब किसी के प्रति मोह नहीं रहा है। उसकी इच्छा यही है कि कोई भी हो जो उसे बाहों में डालकर प्यार करें। इस अतृप्ति को वह अपने बेटे को बाहों में डालकर, कस के अपने को तृप्त करती है।

कम्मो की तृप्ति के लिए छटपटाती भावनाओं की ओर संकेत किया गया है। जैसे "दूज का चाँद पतली अर्धचन्द्राकार रेखा-मानों किसी को कस लेने के लिए बाँहो का घेरा बनाकर बैठा हो।"[१३]

इस प्रकार "बाहों का घेरा" अतृप्त अमुक्त यौन-इच्छाओं को रूपायित करनेवाली यथार्थ मूलक कहानी है।

(८) कमरे, कमरा और कमरे :

इस में लेखिका ने नायिका की मन: स्थिति को बड़े स्वभाविक ढंग से चित्रित किया है।

नीलू के घर में बीमार अम्मा है। घर में पाँच कमरे है। नीलू की जिंदगी घर में ही बसर होती थी। क्योंकि उसे बीमार अम्मा की सेवा करनी थी। ऐसे वातावरण में नीलू पढ़ती है और एम.ए में प्रथम श्रेणी प्राप्त करती है। एक दिन नीलू दिल्ली कॉलेज में लग जाती है। चार साल में पी-एच.डी की डिग्री हासिल करती है।उसकी प्रसंशा होती है। 'कमरे, कमरा और कमरे' में नीलू का अस्तित्व और व्यक्तित्व बनता बिखरता जाता है। नौकरी करते समय होस्टेल में रहती है। और श्रीनिवास से परिचय हो जाने पर उसके फ्लेट में रहने लगती है। इस तरह कमरें में उसका निजी व्यक्तित्व सँवरता- बिखरता जाता है। ''यह नारी प्रधान कहानी है, जिसमें एक महत्वाकांक्षी नारी आदि से अन्त तक अपने जीवन को कमरों में ही सिमटता और बिखरता हुआ अनुभव करती है।''[१४] नीलू की विवशता को मन्नूजी सांकेतिक भाषा द्वारा चित्रित किया है ''ऊपर पूरी तेजी के साथ पंखा चल रहा था ,बगल में श्रीनिवास के खर्राटों की हल्की सी आवाजें आ रहीं थी और इन दोनों की मिली-जुली आवाजों में पेपर-वेट के नीचे फरफराते कागजों की आवाज दब सी गई थी।''[१५]

(९) ऊँचाई :

'ऊँचाई' इस कहानी संग्रह की अंतिम कहानी है। इसमें आधुनिक नारी के अन्तर्द्वन्द को चित्रित किया गया है।

''ऊँचाइ' एक ऐसे महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी प्रश्न को पाठकों के सम्मुख उपस्थित करती है, जहाँ आकर यह सोचना अनिवार्य हो जाता है कि क्या एक ऐसी भावनात्मक ऊँचाई नहीं; जहाँ आकर नारी अपने पति और प्रेमी दोनों को पूर्ण ईमानदारी के साथ समर्पित हो सके ? शारीरिक रूप से भी।''[१६] आधुनिक नारी अब उस पारस्परिक पत्निबोध से मुक्त हो गई है जिसमें केवल पतिव्रता

धर्म ही उसके जीवन का प्रमुख मंत्र था। अब वह पति एवं प्रेमी इन दोनो में किसी भी प्रकार का भेद नहीं करती। पति होते हुए भी किसी परपुरूष से प्रेम करना उसके लिए पतिव्रता भंग नहीं है। लेखिका ने दाम्पत्य जीवन की नयी सच्चाई को बड़ी निर्भीकता के साथ चित्रित किया है। इस कहानी की नायिका शिशिर की पत्नी होते हुए भी अपने पुराने प्रेमी अतुल से मुलाकात होने पर वह उसे अपना शरीर समर्पित कर देती है, शिशिर के लिए यह असह्य हो जाता है। लेकिन शिवानी कहती है-"मेरे जीवन में तुम्हारा जो स्थान है उसे कोई नहीं ले सकता ,लेना तो दूर उस तक कोई पहुँच भी नहीं सकता। किसी के कितनी ही निकट चली जाऊँ चाहे शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित कर लू पर पर मन की जिस उँचाई पर तुम्हें बिठा रखा है, वहाँ कोई नहीं जा सकता। किसी से उसकी तुलना करने में भी तुम्हारा अपमान होता है।"[१७] ऐसा करने पर दोनो में सुलह हो जाता है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में प्रेम का एक नया दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होता है। प्राचीन नारी भी दूसरे पुरुषों के प्रति आकर्षण का अनुभव करती थी, लेकिन अपनी सामाजिक स्थितियों के कारण खुलकर जी नहीं पाती थी। आज की शिक्षित नारी प्राचीन पतिव्रता की मानसिकता से अब मुक्त होने लगी है और अपने विवाहेतर सम्बन्धों को भी ईमानदारी से व्यक्त करने लगी है। मृदुला गर्ग के उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' में भी इसी प्रकार के विचारों की अभिव्यक्ति मिली है।

त्रिशंकु :

मन्नूजी का यह पाँचवा कहानी संग्रह १९७८ में प्रकाशित हुआ। इसमें १० कहानियाँ संग्रहीत है-

१. आतेजाते यायावर	२. दरार भरने की दरार
३. स्त्री-सुबोधिनी	४. शायद
५. त्रिशंकु	६. रेत की दीवार

७. एखाने आकाश नाई

१०.असामायिक मृत्यु

(१) आतेजाते यायावर :

आधुनिक युग में प्रेम के बदले हुए नये भाव-बोध का चित्रण 'आतेजाते यायावर 'कहानी में मिलता है।

कहानी की नायिका मिताली का परिचय नरेन से होता है। छोटी-सी मुलाकात में दोंनो की दोस्ती हो जाती है। मिताली अविवाहिता और प्राध्यापिका थी। दोंनो शारीरिक सम्बन्ध जोड़ते हैं। फिर यायावी नरेन मिताली को कहता है -''खींचकर लाना मेरा काम था, अब इस खुली दुनिया में अपना रास्ता तलाश करना तुम्हारा काम है।''[९८] क्योंकि अपने साथ चलने के लिए उसने एक लिपीपुती, बड़ी सी बिंदी लगानेवाली गुडिया जैसी लड़की चुन ली थी। ''इस कहानी में स्वभाविकता, सहजता तथा अनुभूति की गहराई के साथ नये मूल्य उभारने का प्रयत्न किया गया है। किन्तु मूल्यों का उभार खुला है , उसमें सूक्ष्मता नहीं है। फिर भी आंतरिक कमजोरियों का उद्घाटन लेखिका ने कौशल के साथ किया है।'' [९९]

पुरुष आधुनिकता के नाम पर भारतीय नारी को छलता है और शादी के लिए दूसरी संस्कारयुक्त , शरीर से पवित्र स्त्री को पसंद करता है। उसी बात का वर्णन इस कहानी में हुआ है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में आधुनिक शिक्षित युवकों की तथाकथित आधुनिकता का दंभ खुल गया है।

(२) दरार भरने की दरार :

दूसरी कहानियों की तरह यह कहानी भी दाम्पत्य जीवन से सम्बन्धित कहानी है।

''दरार भरने की दरार' की नायिका अपनी सहेली के दरार पड़े जीवन में सेतु बनने का उपक्रम करती है। सेतु नहीं बन पाती तो सहेली के आग्रह पर उसे

अलग स्थापित करने हेतु अनेक परेशानियों से जूझती है। लेकिन अन्त में अपने सम्पूर्ण परिश्रम को व्यर्थ देख एक खीझ सी अनुभव करती है।"[१००] मुक्त विचारधारा, नारी का स्वतन्त्र अस्तित्व उभारने के साथ-साथ नारी के विचारों में कितना परिवर्तन आ चुका है उसका सुन्दर चित्रण लेखिका ने इस कहानी में किया है। कहानी में दो व्यक्तित्व, दो अहम् का झगड़ा है और ये लोग घर तोडने को तैयार है लेकिन अपना अहं तोड़ना नहीं चाहते। जिस नारी के पास जीविका के लिए कोई साधन न हो उसका अहं जरुर झुक सकता है पर आत्म-निर्भर नारी का दृष्टिकोण सर्वथा भिन्न है।

(३) स्त्री-सुबोधिनी :

इस कहानी की नायिका आयकर विभाग में काम करती है। वह प्रेम-पिपासु है, इसलिए अपने बॉस 'शिंदे' से बहुत प्रभावित है। शिंदे खूबसुरत, रसिक एवं कवि भी है। उन दोंनो में प्रेम हो जाता है। लेकिन बाद में पता चलता है कि शिंदे विवाहिता तथा एक बच्चे का बाप भी है। वह प्रेम सम्बन्ध को तोड़ना चाहती है किन्तु शिंदे हंमेशा प्रेम जताता रहता है। इस कहानी में ऐसी नारी का चित्रण हुआ है, जो विवाहिता पुरुष द्वारा छली गई है। नायिका अपने प्रयत्नों से उसको पूर्णतः पाने की इच्छा रखती है, लेकिन ऐसा नहीं हो सका।

यह कहानी आत्मकथनात्मक शैली में लिखी गई है। " स्वतंत्रता के बाद आधुनिकता के व्यामोह में नारी जीवन में जो विसंगतियाँ उत्पन्न हो गयी है और पुरातन संस्कारो से मुक्ति मिले बिना नूतन से तालमेल बैठानें में नारी के जीवन में जो विद्रूपता पैदा हो गई है उस पर तथा प्रेम के आधुनिक स्वरुप को प्रस्तुत करने के लिए 'स्त्री सुबोधिनी' शीर्षक कहानी के माध्यम से बड़े ही सहज और स्वभाविक ढंग से तीखा व्यंग्य किया है।"[१०१]

(४) शायद :

आर्थिक तंगी से अनेक परिवार तहस-नहस होते है। उसका यथार्थ चित्रण

इस कहानी में मिलता है ।

राखाल जहाज में मैकेनिक की नौकरी करता है । उसको तीन साल के बाद एक महीने की छुट्टी मिलती है । इसलिए घर से नाता टूट जाता है । वे अपने घर में पराया या तो मेहमान की तरह आता है । रखाल अर्थप्राप्ति हेतु घर से दूर रहता है इससे घर-परिवार में बिखराव आता है । फिर भी दुनिया तो चलती है । इस प्रकार आज ''पारिवारिक मूल्यों का अवमूल्यन होता जा रहा है , उसे भी यह कहानी विश्लेषित करती है । कथा के प्रति कथाकार का दृष्टिकोण पूर्णत : आधुनिक है और वह समूची कथा को आज के बदलते हुए सन्दर्भों में प्रस्तुत कर पाने में पूरी तरह सक्षम है ।''[१०२]

'शायद 'कहानी में राखाल के संघर्षरत , भावनाशून्य जीवन को लेखिका ने प्रतीकों के माध्यम से चित्रित किया है । इस प्रकार प्रस्तुत कहानी पारिवारिक विघटन की कहानी है ।

(५) त्रिशंकु :

'त्रिशंकु' कहानी में लेखिका ने माँ-बेटी की विचार धारा के आधार पर दो पीढ़ियो के अंतर को स्पष्ट किया है । ''बुद्धिजीवी और आधुनिक कहे जानेवाले माता-पिता अपनी किशोरी पुत्री को आधुनिकता के नाम पर स्वतः का बडप्पन बनाये रखने के लिए पुरुषमित्रों के साथ घुलने-मिलने की स्वतंत्रता तो दे देते है , लेकिन समय-समय पर किस प्रकार उनकी आधुनिकता भरभराती रहती है वह किशोर पुत्री किस प्रकार अपने पालको के आधुनिक और परंपरागत स्वरुपों के बीच त्रिशंकु सी असहाय हो जाती - इस कथ्य को केन्द्र 'त्रिशंकु'कहानी लिखी गई है ।''[१०३]

''त्रिशुंक' में पुरानी वर्जनाओं और नई संभावनाओं का संघर्ष है ; जिसके बीच मुक्ति कामी नारी का स्वतंत्र अस्तित्व उभरा है । इनका मूल स्वर परंपरागत नैतिकता के प्रति खुला विद्रोह तथा अभाव, कुंठा और क्षोभ भरा आक्रोश है । इसीलिए इनके कथ्य में नैतिकता तथा अनैतिकता से परे यथार्थ

चित्रण की वह दृष्टि है जो कहानी को उनके आंतरिक एवं ब्राह्य रचाव को नया तथा आधुनिक रूप ही नहीं अपितु उसे आज की जिंदगी की जटिलताओं को झेलने की शक्ति प्रदान करती है।''[१०४]

इस कहानी में 'मै'' का नाम तनु है। इसमें तनु के अंतर्द्वन्द्व को अत्यन्त सहजता से स्पष्ट किया है।

(६) रेत की दीवार :

मन्नूजी ने इस कहानी में रवि नामकशिक्षित युवक की मानसिक कुंठा तथा निराशा को सुदर कलात्मक ढंग से चित्रित किया है।

रवि के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है फिर भी इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष में पढ़ रहा था। माँ की आँखो का आपरेशन करना है तो दूसरी ओर छोटा भाई हमेशा बिमार ही रहता है। घरवाले फिर भी सोचते हैं कि अगर रवि यह कोर्स पूरा कर लेगा तो नौकरी जरूर लग जायेगी। रवि बेकार हो जाता है। उसे अपने मित्र की बातें याद आती है- '' यहाँ कोई भविष्य नहीं है इन लोगों का... आजकल सेंकडों इंजीनियर्स मारे-मारे-फिरते है किसी तरह फॉरन जाने की तिकड़म भिड़ाओ...एक बार जाने को मिल जाए। पर। बच्चू, इस सबके लिए पुल और पुश चाहिए। मैरिट को कोई नहीं पूछता।...।''[१०५]

हमारे देश में बेरोजगारी की समस्या आज के शिक्षित युवा वर्ग के सामने मुँह फाड़े खडी है। कथा मध्यवर्ग से ली गई।

(७) तीसरा हिस्सा :

इस कहानी को मन्नूजी ने मनोवैज्ञानिक धरातल पर लिखी है।

इस कहानी का नायक शेराबाबू हैं जो कि पाक्षिक पत्रिका के सम्पादक रह चुके है। आर्थिक संकट के कारण उनकी यह पत्रिका ज्यादा दिन नहीं चल पाती। परिणाम स्वरूप वह क्रोधावस्था और चिड़चिडापन के स्वभाव वाला बन जाता है। शेराबाबू स्वयं खुद से बातें करते दिखते है। वह स्वयं को, अपनी

पत्नी, को सुधीर को तथा अपने स्टाफ को अपनी दृष्टि से ही आंकते है। पुन: पत्रिका निकालने के आश्वासन को पाकर वह तापस और जगत की नियुक्ति के विषय में सोचते है। इस प्रकार वह खुद को आश्वासन देते है। नायक का व्यवहार उसकी मन: स्थिति के अनुसार होता है।

व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग प्रचुरता से मन्नूजी इस कहानी में किया है। इस कहानी में जीवन के कई अंगो पर व्यंग मिलता है। "लानत है स्साले इन संपादकों पर। दोगले और बेपेंदी के। अच्छा है बेटा, तुम यही करो। जो शक्ति स्थान पर बैठा है उसके चरणचापो ओर अपनी सात पुश्तों को तार लेने का सिलसिला बिठा लो। अरे, कम से कम कुछ करके चरण थकने तो देते इनके फिर चापते। पर इतना सबर किसको ? लेखक, संपादक, अध्यापक सबके सब चले जा रहे लाइन लगाकर। जय कुर्सी मैया। यह तो शेराबाबू ही स्साला उल्लू का पट्ठा है। जो सिद्धातों की दुम पकड़े -पकड़े सबका लतियाव सहता रहता है। एक दिन ऐसे ही दफा हो जायेगा... कोई दो आँसू बहाने भी नहीं आएगा।"[१०६]

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी आधुनिक जीवन की विसंगतियों और विद्रूपताओं को उनके यथार्थ रूप में उकेरती है।

(८) अलगाव :

'अलगाव' राजनीति पर जबरदस्त व्यंग करने वाली श्रेष्ठ कहानी है। इस कहानी के आधार पर आगे चलकर मन्नूजी ने 'महाभोज' नामक उपन्यास लिखा।

इस कहानी में सरोहा गाँव की कथा है। बिसेसर उसी बाँव का हरिजन था। आज उसी बिसेसर की लाश सड़क के किनारे पुलिया पर से मिली। बिसेसर छोटा सा आदमी था। खूनी नहीं मिल पाया। लेकिन दो कान्सटेवल सस्पेन्ड कर दिये गये। उन दिनों उपचुनाव होने वाला था, जिससे इस छोटी सी घटना को भी बड़ा महत्व प्राप्त हुआ। मुख्यमंत्री दा साहब खुद बिसेसर के घर गये। वहाँ

जाकर उसके बूढे बाप को तसल्ली दी। राजनीतियों ने हरिजनों का वोट लिया और हत्या आत्महत्या होकर रह गयी।

इस प्रकार 'अलगाव' कहानी को राजनैतिक कहानी कही जायेगी। क्योंकि इसमें समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों का सुन्दर यथार्थ चित्रण मिलता है। लेखिका ने आधुनिक राजनीति पर करारा व्यंग्य किया है।

(९) ऐखाने आकाश नाई : आकाश के आइने में :

इस कहानी में शहरी एवं ग्रामीण नारी की समस्याएँ चित्रित हुई है। शिप्रा पति से अलग होकर स्कूल चलाती है , शिप्रा के स्कूल में दिनेश और लेखा व और जितने भी लोगो से मिलती है उन सबकी मानसिकता किसी न किसी तरह के त्रास से ग्रस्त है। कोई सामाजिक रूढियों का तो कोई अपनी पारिवारिक त्रासदी को झेल रहा है। सुषमा अपनी शादी को लेकर पूरे परिवार के विरोध के कारण पीड़ित है। शहरी जीवन का यह माहोल ऊपर से कितना ही प्रसन्न और उल्लासपूर्ण लग रहा है लेकिन अंदर अशांत मानसिकता का सागर बह रहा है। आज भारत के गाँव महानगर के कारण काफी बदल गये है। कहीं-कहीं तो इतने प्रभावित है कि यह जीवन नर्क लगता है।

इस कहानी में शहर एवं गाँव की समस्याओं को केन्द्रस्थ किया गया है। व्यक्ति न गाँव में सुखी है न शहर में। समस्या तो दोनो तरफ है। लेखा शहर में रहती है तो शहर से उब जाती है वह कहती है -' यहाँ न खूली , न साफ हवा मिलती है , न अच्छा खाने-पीने को ही उपलब्ध हो पाता है। ' इस प्रकार वह जिस धारणा को लेकर गई थी वह झूठी सिद्ध हुई। उसे गाँव का जीवन शहर से बुरा लगने लगा। गाँव में सुरेश, चाची, भाभी, गोरा, सबकी अपनी -अपनी समस्या है। और सभी का दम घुट रहा है उस वातावरण में। लेखा वहाँ से भागना चाहती है। वह बड़ी तीव्रता से अपने पति की राह देख रही है ताकि यहाँ से जल्दी कहीं दूर पहाड पर जा सके। इस कहानी में लेखिका ने एक बंगाली गीत की चार पंक्तियों का चित्रण भी किया। कथा शिल्प की दृष्टि से उसे गीत शैली

के अन्तर्गत ले सकते है। गीत का उदाहरण-

''शोनो बन्धु शोनो प्राणहीन ऐ शहरेर इतिकथा
इँटरे पांजोडे कोहार खांचाए दारुण मर्म व्यथा
एखाने आकाश नाई , एखाने बाताश नाई
एखाने अन्धगलीर नरके मुक्तिर व्याकुलता '' १०७

(१०) असामयिक मृत्यु :

यह कहानी पहले किसी पत्रिका में छपी थी। बाद में इसे 'त्रिशंकु' कहानी संग्रह में संग्रहित किया गया। यह मन्नूजी की बडी सुंदर कहानी है।

दीपू के कला रुप की असामयिक मृत्यु की कहानी है। उसके पिता महेशबाबु की मृत्यु ४४ साल की आयु में , ऑफिस में काम-करते करते हार्ट फेल हो जाने से हो जाती है। दीपू आर्ट्स में पढ़ रहा था। उसे नाटक में ज्यादा रूची थी। नाटक के जानेमाने कलाकार उत्पलदत्त ने उसे ट्राफी देते हुए प्रोत्साहित किया था। उन्होंने पूना की अभिनय संस्था का प्रवेशपत्र भी मँगवाया था किन्तु अचानक पिता की मृत्यु ने दीपू की दुनिया को बदल दिया।

समाज में मध्यवर्ग के अर्थार्जन करनेवाले प्रमुख की मृत्यु होती है तो पूरा घर रास्ते पर आ जाता है। साथ-साथ मा- शारदा की मनःस्थिति को भी चित्रित किया गया है। क्योंकि असहाय बने दीपू के कलाकार की मृत्यु का शोक व्यक्त करना चाहा फिर भी परिस्थितिवश मूक बनकर जी रही है। यह स्थिति माँ की नहीं बल्कि पूरे घर की है। इसी बात का बेहतरीन चित्रण मन्नूजी ने इस कहानी में किया है।

आँखो देखा झूठ : (बाल कहानी संग्रह) :

'आँखो देखा झूठ' मन्नूजी का बालोपयोगी कहानी संग्रह है। उसमें आठ कहानियों को संग्रहित किया है। इस कहानी संग्रह की पहली कहानी 'आँखो देखा झूठ' है ।

'आँखो देखा झूठ' कहानी में राजा धनसिंह तथा रानी मनसा का चित्रण आता है। राजा धनसिंह शिकार करने के लिए जाते है। लेकिन कुछ दिनों तक वह वापस नहीं आते। इस कारण मनसा युवक का वेश धारणकर उसे वन में खोजने निकलती है। वह भी जंगल में भटक जाती है। वह घूमती-घूमती साधु की झोंपडी में पहुँच जाती है। योगानुयोग राजा भी अपना मार्ग ढूंढते-ढूंढते उसी तालाब के पास पहुँच जाता है जहाँ रानी प्रातःकालीन स्नान करती है। राजा पीछा करता हुआ इस झोपडीं के पास पहुँच जाता है। रानी को पुरूष-वेश में न पहचान कर तीर चला देता है, साधु आकर सारी परिस्थिति जान लेते हैं तथा वह राजा को उपदेश देते है -

''जैसी अधीर तेरी रानी, उससे दस गुना अधीर तू निकला। जब आदमी धीर खो देता है तो सच और झूठ का भेद नहीं कर सकता।''[१०८]

इस कहानी के द्वारा मन्नूजी धैर्यता का पाठ पढ़ाती है। हमें जीवन में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए कोई भी कार्य सोच-विचार के करना चाहिए। यही कहानी का उद्देश्य है।

दुर्भाग्य की हार :

इस कहानी संग्रह की दूसरी कहानी है। यह एक राजा की कहानी है जो अपने दोनों पुत्रों का ब्याह अजीब रीति से तय करते है। जिस लड़के का तीर जिसके घर निकट गिरेगा उसके साथ उसके लड़के की शादी होगी। पहले राजकुमार प्रणवीर का तीर सेठ के घर गिरता है। फलतः उस फूल सी कोमलऔर चाँद जैसी सुन्दर कन्या के साथ उसका ब्याह हो जाता है। जबकि दूसरे राजकुमार रणवीर का तीर कोठी कन्या के घर गिरने से उसके साथ विवाह होता है। सामने आयी मुसीबत को देखकर वह कह उठता है -

'' सामने आयी मुसीबत को देखकर मुँह फेरना कायरता है।
उसे मेहनत से हिम्मत से झेलना ही वीरता है।'' [१०९]

'आँखो देखा झूठ' की ही तीसरी कहानी 'वशीकरण' है। चौथी कहानी

'बढ़ता हुआ यश', 'आँखो देखा झूठ' से सम्बन्धित है। यह किशान की कहानी है। जिसकी लड़की सोनल के सोने के बाल है। उस पर राजकुमार मोहित हो उठते है। लेकिन किसान की कन्या सुनार के बेटे को पति के रूप में स्वीकार करती है। इस प्रकार इस कहानी में सोनल के धैर्य और साहसिकता का चित्रण मिलता है।

आगे की कहानी 'संकट का सूझ' है। इसमें लेखिका ने किसान की सूझ तथा चतुराई का सुंदर चित्रण किया है। किस प्रकार किसान चतुराई तथा धीरज से अपने खेत में चोरी करने आये चोंरो को दंड देता है, उसका रूचिकर चित्रण किया। किसान जानता है कि खुदगर्ज चोरों के अंदर एकता नहीं होती है। उस का लाभ उठाकर अंदर ही अंदर झगड़ा करवा के चोरों को पाठ पढ़ाया जाता है।

इस कहानी में मन्नूभंडारी ने किसान के माध्यम से मानव मन की पकड़ का सुंदर चित्रण किया है।

आगे की कहानी 'अवाजे' है; जो कल्पना प्रधान कहानी है। कहानी में नवीनता का अभाव है। राजा रानी की तथा जादू के प्रभाव से रानी का चिड़िया बन जाना तथा राजकुमार के माध्यम से रानी को पुनः मानव शरीर धारण कर लेना यही कहानी की मूल कथावस्तु है।

'नैहले पे देहला' कहानी में एक कंजूस और धूर्त व्यापारी का चित्रण किया है। जो सबको ठगता रहता है। किन्तु स्वयं एक नाई द्वारा ठगा जाता है। इस प्रकार नहले पे दहला मिल जाता है और इसी कारण इस कहानी का नामकरण रखा गया 'नैहले पे दहला'

अंतिम कहानी न परियों की है न राजा-रानी की। एक आदर्श बालक सुमेरा के चरित्र को उजागिर किया है। उस बालक में लेखिका ने आदर्शवादिता, लगन, उत्साह, मेहनत, हिम्मत ऐसे अनेक गुणो का चित्रण किया है।

नायक खलनायक विदूषक :

इस कहानी के शीर्षक पर २००२ में मन्नूभंडारी की समग्र कहानियाँ संकलित की गई थी। परंतु पहले यह कहानी 'हंस' पत्रिका में अगस्त १९८६ में प्रकाशित हुई थी। और सन् २००२ में इस कहानी के शीर्षक पर आधारित मन्नूजी की ५० कहानियों को संग्रहित करके कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ था। जिसमें मन्नूजी की बालोपयोगी कहानियों को संग्रहीत नहीं किया गया।

इस कहानी में मन्नूजी ने एक ऐसे पुरुष का चित्रण किया जो परिस्थितिवश अपनी पत्नी तथा सासुजी के दबाव में आकर कमजोर बन गया है।

कहानी का नायक अमितोष (अमित) एक बेकार किन्तु प्रतिभाशाली नाटककार है। उसकी पत्नी का नाम पारुल है जो बड़े घर की बेटी है। उसकी माँ को घमंड है तथा अपनी बेटी पर अभिमान है। पारुल नाटक में भी अच्छा अभिनय करती थी। पारुल अमित को अपनी मर्जी से पसंद करती है। लेकिन कुछ दिनो में जैसे प्यार का नशा उतरते ही वास्तविकता सामने आती है। अमित नाटक वगैरह में व्यस्त रहने के कारण पारुल को अपने स्व. पिताजी की ऑफिस में नौकरी करनी पड़ती है। धीरे-धीरे दोनों एक दूसरे से दूर होते जाते है। फिर भी सामाजिक संस्कार के कारण पति-पत्नी का फर्ज निभा रहे है। अमित पारुल की कमाई पर बड़े एस-आराम से जीवनयापन करता है। वह एक नाटक मंचित करना चाहता है लेकिन किसी भी व्क्ति की सहायता लेना नहीं चाहता। उसमें नायिका का रोल नंदा नाम की स्त्री को देना चाहता है। हांलाकि उसकी पत्नी भी अभिनेत्री है। वह उसमें काम करना चाहती है। वह अपनी माँ के माध्यम से अमित को सुधारने की कोशिश करती है उसकी माँ को पैसों का घमंड है। वह अमित का आत्मसम्मान , अभिमान , खरीदना चाहती है। अमित अपनी सास से झगड़ना चाहता है। वह उसका एक भी पैसा लेने के लिए तैयार नहीं है। वह बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करता है। उसके मन में यह अन्तर्द्वन्द पनपता है कि माँ-बेटी को ठीक कर दूँ। लेकिन सामने जाते ही चूप हो जाता है। अतः वह मजबूरन साँस के पैसो को स्वीकार करता है। धीरे-धीरे पारूल और उसकी सास की

नजरों में वह गिर जाता है कि वे उसे घटिया आदमी समझते है। इस कारण अमित नंदा की तरफ आकर्षित होता है, और बताना चाहता है कि मैं पूर्ण पुरुष हूँ।

मन्नूजी ने अमित के पात्र द्वारा यह स्पष्ट किया है कि वह एक खंडित पुरुष पात्र है। जो, कुछ करना चाहता है, लेकिन कर नहीं पाता। अमित नायक बनना चाहता है लेकिन पारुल और उसकी माँ की नजरों में वह विदूषक ही है। नायक बनने हेतु वह नंदा के पास चला जाता है लेकिन नायक बनने की जगह खलनायक होकर रह जाता है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी आज की भौतिक-चकाचौंध में व्यक्ति के वजूद के गलते जाने की और नये अनचाहे विद्रूप रूपों में ढलते जाने की त्रासदी है।

अंकुश :

'अंकुश' एक आधुनिक परिवार के आधुनिक गृहिणी की कहानी है। इस गृहिणी को अपने वृद्ध ससुर भी बोझ लगते हैं। पुराने संस्कारों से वह बहुत नाराज है। जो मोर्डन युग की नयी रोशनी से चकाचौंध है। उसके कोई भी कार्य पर ससुर का अंकुश न होने परभी वह ऐसा महसूस करती है कि उसके ससुर उस पर अंकुश लगा रहे हैं।

आखिर एक दिन उसके ससुर चले जाते है। उस दिन बीना गहरी नींद सोई। जब बीना अपनी लड़की को पिकनिक के लिए कहती है तो अपनी अपनी ममी पर व्यंग्य करती है -

'' मम्मी, मैं पिकनीक नहीं जाऊंगी...मुझे पढना है। रीयली शी इज बिकमिंग ए हैडेक दीन डेज।''[११०]

तब उसकी मम्मी को मालूम पड़ा कि जिस ससुर को वह अंकुश मान रहीं थी, उससे भी बढ़कर उसकी अपनी जायी संतान स्वयं उसके लिए अंकुश मान रही है। इसलिए यह कहावत चरितार्थ होती है कि -''जैसा बोओ वैसा पाओ''।

इस प्रकार 'अंकुश 'कहानी आधुनिकता के नाम पर पनप रही अमानवीयता पर करारा व्यंग्य करती है। आधुनिकता के नाम पर मनुष्य का निरंतर विवेकहीन - न्यायहीन होता जाना सचमुच में एक चिंता का विषय है।

निष्कर्ष :

मन्नूभंडारी के कथासाहित्य के सिंहावलोकन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मन्नूजी मानव-मनोविज्ञान के आधार पर मानव मन की गहराई तक पहुँचने में सफल हुई है। इसीलिए 'आपका बंटी' हिन्दी साहित्य का श्रेष्ठ मनोवैज्ञानिक उपन्यास बन पडा है। पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं से जूझते हुए मानव की अन्तरानुभूतियों को सशक्त अभिव्यक्ति देते हुए एक ऐसे बिन्दु पर पहुँचा दिया , जहाँ मनोविज्ञान और समाजशास्त्र अपने आप जाकर मिल जाते है। बंटी की समस्या बंटी की नहीं बल्कि विश्व के सभी बंटियों की समस्या बनकर रह जाती है। बंटी की जो मनोदशा का चित्रण हुआ है शायद ही कोई हिन्दी उपन्यास में हुआ है। इसलिए तो हिन्दी साहित्य के प्रथम मनोवैज्ञानिक कथाकार जैनेन्द्र कुमार ने भी इस उपन्यास की भूरी-भूरी प्रसंशा की है।

'महाभोज'उनकी सशक्त कृति है। इन दो उपन्यासों ने मन्नूजी को एक ऊँचे दर्जे की लेखिका तक पहुँचा दिया। हिन्दी साहित्य में बहुत कम उपन्यास ऐसे हैं जो राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान व्यवस्था तथा समाज का नग्न ढाँचा प्रस्तुत करते हैं। राजनीति में चल रही समकालीन कूटनीतिज्ञता का यथार्थ चित्रण 'महाभोज'है। मानो ऐसा प्रतित होता है कि मन्नूजी ने लम्बे अरसे तक राजनीति में काम किया हो। ऐसा हमें उनकी कृति पढ़ने से महसूस होता है।

'एक इंच मुस्कान'की विशेषता यह है कि वह हिन्दी साहित्य का सहयोगी सफल उपन्यास है। 'स्वामी'उपन्यास में भी लेखिका ने शरतचंद की कहानी में कुछ परिवर्तन करके उसे एक सशक्त औपन्यासिक रचना के रूप में परिवर्तित किया है। उसकी मार्मिकता और मानवीय संवेदना पाठक के हदय को छू जाती है।

मन्नूजी की कहानियाँ की ओर ध्यान देते हैं तो मालूम होता है कि वह एक सफल कहानी लेखिका है।

महिला-लेखिकाओं में उनका योगदान सराहनीय है। इतना ही नहीं, हिन्दी के अनेक सशक्त कहानीकारों की पंक्ति में उन्होंने अपना स्थान सहजतया बना लिया है। उनकी अधिकांश कहानियों मे पारिवारिक, दाम्पत्यजीवन की समस्याएँ व आधुनिक प्रेम का चित्रण मिलता है। नारी मन की टूटन एवं घुटन का चित्रण करने में वह सफल रही है। वह पारंपरिक बंधनों से नारी को मुक्त कराना चाहती है।

मन्नूजी ने नारी-मन के अन्तर्द्वन्द्व का सहजता से वह सूक्ष्मता से चित्रण किया है। 'मैं हार गयी' कहानी संग्रह की 'ईसा के घर के इन्सान' की एंजिला, 'गीत का चुंबन' की कनिका, 'एक कमजोर लड़की की कहानी' की रूप, 'अभिनेता' की रंजना, 'कील और कसक' की रानी आदि में नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व का सूक्ष्म चित्रण करने में मन्नूजी सफल रही हैं।

मन्नूजी की कहानियों की विशेषता यह भी रही है कि उनमें पति-पत्नी के बनते-बिगड़ते सम्बन्ध एवं आधुनिक प्रेम का बड़ा ही सूक्ष्म, मनोवैज्ञानिक, सहज एवं सटीक चित्रण हुआ है।

आधुनिक स्त्री के लिए प्रेम परिवर्तनशील है। इसी कारण 'यही सच है' की दीपा-निशीथ का साथ छोड़कर संजय को अपनाती है। 'उँचाई' कहानी में तो पति-पत्नी के बीच तीसरा व्यक्ति भी आ जाय तो भी अपने पति को समझाकर अपना बनाने में नायिका सफल रहती है।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते है मन्नूजी का कथा-साहित्य उच्च-स्तरीय और आधुनिक जीवन की विशेषताओं, उसके नये मूल्यों को उकेरने वाला तो है ही; उसमें आधुनिक जीवन की विद्रूपताओं, विसंगतियों और अवमूल्यों को छानने की विवेक बुद्धि भी मिलती है।

*

संदर्भानुक्रम :

१. डॉ.पारुकान्त देसाई - आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास पृ.२४

२.रामदरश मिश्र, हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा , पृ.१७९

३.डॉ.पारुकान्त देसाई -आधुनिक लेखिकाओ के नगरीय परिवेश के उपन्यास , पृ.२६

४.डॉ.नीरजा -मन्नू भंडारी के उपन्यास -साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन पृ.४७

५.डॉ.निर्मला जैन-आधुनिक हिन्दी उपन्यास , पृ.२८३

६.माधूरी बाजपेयी-मन्नू भंडारी एक अध्ययन , पृ.८०

७.मन्नू भंडारी-आपका बंटी , पृ.२७

८.डॉ.धर्मेन्द्र प्रतापसिंह -आपका बंटी एक समीक्षा , पृ.१८

९.मन्नू भंडारी -आपका बंटी , पृ.६७

१०. वही - पृ.१३९

११.डॉ.नीरजा - मन्नू भंडारी के उपन्यास साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन, पृ.१२५

१२.श्रीमति नन्दिनी मिश्र - मन्नू भंडारी के उपन्यास साहित्य , पृ.१२९

१३.डॉ.रामविनोद सिंह-आठवे दशक के हिन्दी उपन्यास,पृ.१६५,१६७

१४.श्रीमति नन्दिनी मिश्र-मन्नू भंडारी के उपन्यास साहित्य, पृ.४३

१५.मन्नू भंडारी-महाभोज , पृ.६

१६.डॉ. ममता शुकला-मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, पृ.५८

१७.डॉ.पारुकान्त देसाई- मानस माला ,पृ.२५

१८.मन्नू भंडारी-महाभोज, पृ.७२

१९.डॉ.रामदरश मिश्र एवं डॉ.नरेन्द्र मोहन - हिन्दी कहानी ,दो दशक की

यात्रा , पृ.२३८
२०.गोपालराय-समीक्षा , पत्रिका -१९७१, पृ.४
२१.मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव-एक इंच मुस्कान, पृ.२६८
२२.वेद प्रकाश अमिताभ-कथाकार राजेन्द्र यादव , पृ.१४
२३. मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव -एक इंच मुस्कान, पृ.४४
२४. वही, पृ.१९६
२५.डॉ.विजय मोहनसिंह - आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना
पृ. ६९९-७००
२६.राजेन्द्र यादव एवं मन्नू भंडारी -एक इंच मुस्कान (अपना अपना वक्तव्य)
पृ.२६३
२७. वही,पृ.२७०
२८. वही, पृ.२७२
२९. वही,पृ.२५१
३०. वही,पृ.१२०
३१.मन्नू भंडारी - स्वामी, पीछे के पृष्ठ से उद्धृत
३२. वही,
३३. वही (भूमिका से)
३४. वही , (भूमिका से)
३५. वही , (भूमिका से)
३६. वही -कलवा , पृ.३-९-१०
३७. वही, पृ.१०
३८. वही,पृ.११
३९. वही,पृ.४१,४३
४०. प्रकाश पंडित-इकबाल की उर्दू शायरी से उद्धृत
४१.मन्नू भंडारी-नायक-खलनायक-विदूषक , ईसा के घर इन्सान, पृ.१०६
४२. वही, गीत का चुम्बन, पृ.४५

४३. वही,पृ.४८-४९

४४.डॉ.ममता शुकला -मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन पृ.६९

४५.मन्नू भंडारी-नायक-खलनायक-विदूषक, जीती बाजी की हार, पृ.४१

४६. वही,पृ.४१-४२

४७. वही,एक कमजोर लड़की की कहानी, पृ.७४

४८.डॉ.सुखवीर सिंह-हिन्दी कहानी समकालीन परिदृश्य, पृ.६३

४९.प्रा.किशोर गिरडकर -मन्नू भंडारी का कथा साहित्य, पृ.१०

५०.डॉ.सूबेदार राय-हिन्दी कथासाहित्य, पृ.५९

५१.मन्नू भंडारी-नायक-खलनायक-विदूषक , अभिनेता, पृ.३७

५२.डॉ.सूबेदार राय-हिन्दी कथासाहित्य ,पृ.६९

५३.किशोर गिरडकर -मन्नू भंडारी का कथा साहित्य, पृ.११

५४. वही,पृ.१०

५५.मन्नू भंडारी-नायक-खलनायक-विदूषक , कील और कसक,पृ.९३

५६. वही, दो कलाकार, पृ.६३

५७.डॉ.सुखवीर सिंह-हिन्दी कहानी समकालीन परिदृश्य ,पृ.६२

५८. किशोर गिरडकर-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य,पृ.११

५९.डॉ.शिवशंकर पाण्डेय-स्वातंत्र्योत्तरहिन्दी कहानी कथ्य और शिल्प ,पृ.२००

६०.मन्नू भंडारी-नायक-खलनायक-विदूषक, अकेली, पृ.१२२-१२३

६१.प्रा.किशोर गिरडकर-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य ,पृ.११

६२. वही,पृ.११

६३.मन्नू भंडारी -नायक-खलनायक-विदूषक, खोटे सिक्के, पृ.१४८

६४.डॉ.सूबेदार राय-हिन्दी कथासाहित्य ,पृ.६२

६५. वही,पृ.६८

६६.मन्नू भंडारी-नायक-खलनायक-विदूषक , हार , पृ.१६२

६७.प्रा.किशोर गिरडकर-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य ,पृ.१२

६८.मन्नू भंडारी-नायक-खलनायक-विदूषक ,मजबूरी, पृ.१७०
६९..प्रा.किशोर गिरडकर-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य ,पृ.१२
७०.डॉ.बंसीधर एवं डॉ.राजेन्द्रसिंह -मन्नूभंडारी का श्रेष्ठसर्जनात्मक साहित्य
पृ.६७
७१.डॉ.भगवानदास वर्मा -कहानी की संवेदनशीलता..सिध्धांत और
प्रयोग,पृ.२२२
७२.डॉ.लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय-आधुनिक कहानी का परिपार्श्व ,पृ.१२३-१२४
७३.डॉ.एम.एल मेहता -स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी,वस्तुविकास एवं शिल्प विधान
पृ.२०७
७४.प्रा.किशोर गिरडकर-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य, पृ.१३
७५.मन्नू भंडारी -नायक-खलनायक-विदूषक,नकली हीरे, पृ.१९०
७६.प्रा.किशोर गिरडकर-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य, पृ.१३
७७.मन्नू भंडारी -नायक-खलनायक-विदूषक, नशा, पृ.१९९
७८.प्रा.किशोर गिरडकर-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य ,पृ.१३
७९.मन्नू भंडारी-नायक-खलनायक-विदूषक, इन्कमटेक्स और नींद, पृ.२०७
८०. वही,रानी माँ का चबूतरा, पृ.२१२
८१. वही,यही सच है, पृ.२६५
८२. वही, पृ.२७४
८३.राजेन्द्र यादव-प्रेमचंद की विरासत , पृ.१०७
८४.मन्नू भंडारी-नायक,खलनायक विदूषक , नई नौकरी, पृ.३५८
८५. वही,पृ.३६०
८६.प्रा.किशोर गिरडकर-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य ,पृ.१४
८७.अनीता राजूरकर-कथाकार मन्नू भंडारी ,पृ.२२२
८८.प्रा.किशोर गिरडकर-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य ,पृ.१४
८९.डॉ.सुखवीर सिंह-हिन्दी कहानी समकालिन परिदृश्य ,पृ.१३२
९०.डॉ.शिवशंकर पाण्डेय -स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी, कथा और

शिल्प ,पृ.२००
९१.मन्नू भंडारी-नायक,खलनायक विदूषक ,एक बार और, पृ.३३३
९२. वही,संख्या के पार, पृ.२९३
९३. वही, बाहों का घेरा, पृ.२७८
९४.किशोर गिरडकर-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य ,पृ.१५
९५.मन्नू भंडारी-नायक,खलनायक विदूषक,पृ.२९९
९६.किशोर गिरडकर-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य ,पृ.१५
९७.मन्नू भंडारी-नायक,खलनायक विदूषक ,कमरे कमरा और कमरे, पृ.३५५
९८. वही,आते जाते यायावर, पृ.४१५
९९.डॉ.सुखवीर सिंह-हिन्दी कहानी समकालिन परिदृश्य ,पृ.१४५
१००.किशोर गिरडकर-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य,पृ.१६
१०१.डॉ.सूबेदार राय-हिन्दी कथासाहित्य ,पृ.१४५
१०२.रघुवीर सिन्हा एवं शकुन्तला सिन्हा-आधुनिक हिन्दी साहित्य मूल्यों से प्रयाण, पृ.४८
१०३.किशोर गिरडकर-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य ,पृ.१६
१०४.डॉ.शिवशंकर पाण्डेय -स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी, कथा और शिल्प, पृ.२००
१०५.मन्नू भंडारी-नायक,खलनायक विदूषक,रेत की दीवार, पृ.३८२
१०६. वही,तीसरा हिस्सा, पृ.४५५-४५६
१०७. वही,ऐखाने आकाश नाई,पृ.४०१
१०८. वही-आँखो देखा झूठ , पृ.१५
१०९. वही,पृ.१९
११०. वही ,नायक खलनायक विदूषक, अंकुश , पृ.११८

*